- 20th Year
- Issue: 190
- 20.11.2026 (FRIDAY)
- ROURKELA
- R.N.I. No. ORIHIN/2006/18978
- (Pages-6)
- Price:2.00

दैनिक

कलिंग समाचार

The kalingasamachar

e-paper-www.thekalingasamachar.com

प्रकाशक एवं संपादक : प्रकाश कुमार धल

Published From ODISHA, JHARKHAND & CHHATTISHGARH



ओडिशा तट की ओर बढ़ रहा तूफान, जगन्नाथ मंदिर प्रशासन ने श्रद्धालुओं को किया सतर्क

भुवनेश्वर १९/११ (संवाददाता): चक्रवाती तूफान अकवान के ओडिशा तट की ओर बढ़ने के बीच, पुरी स्थित जगन्नाथ मंदिर के अधिकारियों ने बृहस्पतिवार को श्रद्धालुओं से मौसम संबंधी परामर्श को ध्यान में रखकर अपनी यात्रा की योजना बनाने की अपील की। पुरी में गुंडिचा मंदिर 19 से 21 नवंबर तक श्रद्धालुओं के लिए बंद रहेगा। हालांकि, अधिकारियों ने बताया कि 12वीं सदी का जगन्नाथ मंदिर खुला रहेगा और वहां पूजा-अर्चना हमेशा की तरह जारी रहेगी। श्री जगन्नाथ मंदिर प्रशासन के मु य प्रशासक अरबिंद पाधी ने श्रद्धालुओं से आग्रह किया कि वे अपनी यात्रा की योजना बनाते समय मौसम को ध्यान में रखें। उन्होंने सोशल मीडिया पर एक पोस्ट में कहा, ''हम सभी श्रद्धालुओं से विनम्र अनुरोध करते हैं कि वे प्रचंड चक्रवाती तूफान अकवान के कारण बनी मौसम की स्थितियों और आधिकारिक परामर्श को ध्यान में रखते हुए ही श्री (जगन्नाथ) मंदिर के दर्शन की



योजना बनाएं। महाप्रभु श्री जगन्नाथ हम सभी की रक्षा करें और हम पर अपनी कृपा बनाए रखें!'' भारतीय मौसम विभाग ने अनुमान जताया है कि चक्रवात आंध्र प्रदेश के नरसपुर और ओडिशा के पुरी के बीच तट को पार करेगा। पुलिस महानिरीक्षक (सेंट्रल रेंज) सत्यजीत नाइक ने बताया कि पुरी में श्रद्धालुओं और आगंतुकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए कई इंतजाम किए गए हैं। नाइक ने कहा, ''चक्रवात को ध्यान में रखते हुए और मौसम विभाग के इस पूर्वानुमान के मद्देनजर कि शुक्रवार दोपहर के आसपास चक्रवात के तट से टकराने के दौरान 0.5 से 1 मीटर तक ऊंची लहरें उठ सकती हैं, 18 नवंबर से पुरी तट पर जाने पर रोक लगा दी गई है।'' उन्होंने कहा, ''कोणार्क में चंद्रभागा तट, चिल्का झील, अस्तरंगा तट और जिले के अन्य पर्यटन स्थलों पर भी पाबंदियां लगा दी गई हैं।'' अधिकारियों ने बताया कि इस बीच, भुवनेश्वर में नंदनकानन प्राणी उद्यान और उससे लगे राज्य बॉटनिकल गार्डन 19 और 20 नवंबर को पर्यटकों के लिए बंद रहेंगे। उन्होंने बताया कि केंद्रपाड़ा जिला स्थित भितरकनिका राष्ट्रीय उद्यान को भी एहतियात के तौर पर 21 नवंबर तक, यानी तीन दिन के लिए बंद कर दिया गया है। उन्होंने बताया कि मयूरभंज जिला स्थित सिमलीपाल टाइगर रिजर्व भी 20 और 21 नवंबर को पर्यटकों के लिए बंद रहेगा।

दाढ़ी रख लेने से कोई मौलाना नहीं बन जाता–आजम खान



नयी दिल्ली १९/११ (संवाददाता): जेल से निकलने के बाद आजम खान का बड़ा बयान सामने आ गया। आजम खान ने कहा कि अब चुनाव नहीं इंकलाब होगा। आजम खान ने ये भी ऐलान कर दिया है कि इस बार उत्तर प्रदेश में होने वाले चुनाव को वो लड़ेंगे। अब लोग धर्म-जाति के नाम पर नहीं लड़ेंगे। आजम खान ने कहा कि न्याय तो न्याय है, लेकिन बदला किसी से नहीं लिया जाएगा। आजाम खान ने रिहाई के बाद बीजेपी पर भी निशाना साधा। आजम ने कहा कि बीजेपी बेइमानी से जीती है। उन्होंने पत्रकारों से कहा कि आपने पार्लियामेंट के नतीजे नहीं देखें। विधानपरिषद के नतीजे नहीं देखें क्या थे। ये जो सीटें जीती हैं वो बेइमानी से जीती हैं। आजम खान ने इंडिया गठबंधन पर भी सवाल उठाए हैं।

इस्तीफे के बाद पद से हटाने की कार्यवाही का कोई संवैधानिक आधार नहीं-जस्टिस यशवंत वर्मा



नयी दिल्ली १९/११ (संवाददाता): न्यायमूर्ति यशवंत वर्मा ने तर्क दिया है कि उच्च न्यायालय के न्यायाधीश के रूप में उन्हें पद से हटाने की कार्यवाही उनके इस्तीफे के बाद निरर्थक हो गई है और इसे जारी नहीं रखा जा सकता। उनका कहना है कि उन्हें पद से हटाने के किसी भी प्रयास का कोई संवैधानिक आधार नहीं होगा। लोकसभा के महासचिव उत्पल कुमार सिंह को 10 सितंबर को लिखे एक पत्र में, उन्होंने लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला द्वारा गठित जांच समिति की रिपोर्ट पर प्रतिक्रिया दी। वर्मा ने कहा है कि उन्हें हटाने की दिशा में शुरू की गई कार्यवाही उनके इस्तीफे के बाद अस्तित्व में नहीं रही। उन्होंने दोहराया कि उन पर लगाए गए सभी आरोप निराधार हैं और वह निर्दोष हैं। इनमें उनके पास अवैध रूप से अर्जित धनराशि होने का आरोप भी शामिल है।

वर्मा ने यह भी स्पष्ट किया कि उनके इस्तीफे को किसी भी आरोप या निष्कर्ष की स्वीकारोक्ति अथवा स्वीकृति के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। यह पत्र बृहस्पतिवार को सांसदों के बीच वितरित किया गया। तीन सदस्यीय जांच समिति ने 12 अगस्त को संसद में पेश अपनी रिपोर्ट में न्यायमूर्ति यशवंत वर्मा के खिलाफ लगाए गए तीनों आरोपों को सही पाया था।

ये आरोप इससे जुड़े हैं कि वह अपने सरकारी आवास पर मिली नकदी की मौजूदगी, उसके स्रोत या उसके मालिकाना हक के बारे में कोई स्पष्टीकरण नहीं दे सके। वह अहम सबूतों को सुरक्षित और संरक्षित रखने में नाकाम रहे, जिसके चलते वह नकदी रहस्यमय तरीके से गायब हो गई। जांच के दौरान उन्होंने टालमटोल वाले और असंतोषजनक जवाब दिए।

विस चुनाव से पहले आप को झटका, नवदीप सिंह संघा ने थामा भाजपा का दामन



नयी दिल्ली १९/११ (संवाददाता): आम आदमी पार्टी से जुड़े रहे नवदीप सिंह संघा अब भारतीय जनता पार्टी में शामिल हो गए हैं। उन्होंने एक कार्यक्रम में पार्टी की सदस्यता ली, जिसमें हरियाणा के मु यमंत्री नायब सिंह सैनी और पंजाब भाजपा अध्यक्ष केवल सिंह ढिल्लों मौजूद थे। 2027 के पंजाब विधानसभा चुनावों से पहले यह एक अहम घटनाक्रम है; हाल के ह तों में आप के कई नेता भाजपा में शामिल हो चुके हैं। इसके अलावा, भाजपाने आप के उन तीन विधायकों का भी स्वागत किया है जो 2 नवंबर को पार्टी में शामिल हुए थे।

इनमें कुंवर विजय प्रताप सिंह, चेतन सिंह जौरामाजरा और हरमीत सिंह पठानमाजरा शामिल हैं, जिन्होंने नई दिल्ली स्थित भाजपा मु यालय में औपचारिक रूप से पार्टी की सदस्यता ली। इस कार्यक्रम में दर्शन सिंह डि पी, रविंदर सिंह, रविंदर रानी, रविंदर कौर रानी और तजिंदर मोनू समेत कई अन्य स्थानीय नेताओं के भी पार्टी में शामिल होने की घोषणा की गई। इनके अलावा, पूर्व ब्लॉक अध्यक्ष विजय तिवारी और पूर्व अध्यक्ष बताए जा रहे नरेश शर्मा भी उन लोगों में शामिल थे, जिनका जिक्र किया गया। AAP के ये तीनों पूर्व विधायक पंजाब के अलग-अलग निर्वाचन क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करते थे। कुंवर विजय प्रताप सिंह अमृतसर उत्तर से विधायक थे, चेतन सिंह जौरामाजरा समाना का प्रतिनिधित्व करते थे, जबकि हरमीत सिंह पठानमाजरा पटियाला जिले के सनौर से चुने गए थे। इनके पार्टी छोड़ने से पहले, भगवंत मान के नेतृत्व वाली सरकार के साथ इनके कई मतभेद सामने आए थे।





विविध समाचार



खाओ पियो मौज करो नहीं चलेगा, पैसा बचाना जरुरी है, जनता को बचत मंत्र देने के साथ ही पीएम मोदी ने राहुल गांधी के आरोपों का भी दिया जवाब

नयी दिल्ली १९/११ (संवाददाता): प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने एक तरफ मंत्रिपरिषद की बैठक में देश को बचत, संयम, स्वस्थ जीवनशैली और नशामुक्ति का संदेश दिया, तो दूसरी तरफ स्वद्धष्टष्टद्ध के शताब्दी समारोह में भारतीय अर्थव्यवस्था की उपलब्धियां गिनाकर कांग्रेस और राहुल गांधी के आरोपों का करारा जवाब दिया। प्रधानमंत्री ने स्पष्ट किया कि भारत की संस्कृति 'खाओ, पियो और मौज करो' की नहीं, बल्कि बचत, अनुशासन और भविष्य के लिए संसाधन जुटाने की रही है। उन्होंने गरीबी और नक्सलवाद के खिलाफ मिली सफलता के बाद नशे की समस्या को अगली बड़ी राष्ट्रीय चुनौती बताते हुए इसके खिलाफ सामूहिक अभियान चलाने का आह्वान किया। वहीं स्वद्धष्टष्टद्ध के मंच से उन्होंने विश्व बैंक के आंकड़ों का हवाला देते हुए बताया कि पिछले 12-13 वर्षों में 50 करोड़ भारतीय गरीबी से बाहर निकले हैं। भारत की लगभग 7 प्रतिशत विकास दर, रिकॉर्ड निर्यात और वैश्विक संस्थाओं के बढ़ते भरोसे का उल्लेख करते हुए प्रधानमंत्री ने राहुल गांधी के भारत को 'इकोनॉमिक डिजास्टर' बताने वाले बयान को भी आंकड़ों के जरिए चुनौती दी। 24 घंटे के भीतर सरकार की प्रशासनिक प्राथमिकताओं और देश की आर्थिक प्रगति को लेकर प्रधानमंत्री के इन दोनों संदेशों से स्पष्ट है कि मोदी सरकार विकसित भारत 2047 के लक्ष्य के लिए आर्थिक विकास के साथ सामाजिक अनुशासन, नागरिकों की सेहत और आत्मनिर्भरता को भी समान महत्व दे रही है।

जहां तक मंत्रिपरिषद की बैठक की बात है तो आपको बता दें कि प्रधानमंत्री ने मंत्रियों और सचिवों से बचत की आदत को प्रोत्साहित करने की अपील की। दरअसल इसके पीछे उनकी चिंता यह है कि जो परिवार कठिन परिश्रम और सरकारी योजनाओं के सहारे गरीबी से बाहर निकले हैं, वे अनियंत्रित खर्च और गैरजरूरी उपभोग के कारण दोबारा आर्थिक संकट में न फंस जाएं। सरकार चाहती है कि लोगों की आमदनी बढ़ने के साथ उनकी बचत भी बढ़े, ताकि परिवार आर्थिक रूप से मजबूत हों और देश में निवेश की क्षमता का विस्तार हो।

साथ ही मंत्रिपरिषद की बैठक में प्रधानमंत्री ने नशे की समस्या को अगली बड़ी राष्ट्रीय चुनौती के रूप में सामने रखा। उन्होंने कहा कि जिस सामूहिक इच्छाशक्ति से भारत ने गरीबी उन्मूलन की दिशा में बड़ी उपलब्धि हासिल की और वामपंथी उग्रवाद यानी नक्सलवाद के खतरे को कमजोर किया, उसी संकल्प के साथ नशे की समस्या को भी समाप्त किया जा सकता है। प्रधानमंत्री के मुताबिक, नशे के खिलाफ लड़ाई केवल सरकार या पुलिस की जिम्मेदारी नहीं हो सकती। इसमें पूरे सरकारी तंत्र, सामाजिक संगठनों, परिवारों और आम नागरिकों की भागीदारी जरूरी है। इसे व्यक्तिगत प्रतिबद्धता का विषय बनाना होगा, क्योंकि नशे का सबसे बड़ा नुकसान देश की युवा पीढ़ी को उठाना पड़ता है।

इस संदेश में स्वास्थ्य और फिटनेस का पहलू भी महत्वपूर्ण है। प्रधानमंत्री की प्राथमिकता ऐसी जीवनशैली को प्रोत्साहित करने की है जिसमें युवा नशे से दूर रहें, शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रहें तथा अपनी ऊर्जा राष्ट्र निर्माण में लगाएं।

हम आपको बता दें कि 18 नवंबर को फिलीपींस से लौटने के कुछ ही घंटों बाद प्रधानमंत्री ने भारत मंडपम में



मंत्रिपरिषद की बैठक बुलाई। बैठक में 11 केंद्रीय सचिवों ने अलग-अलग विषयों पर प्रस्तुतियां दीं। इनमें विज़, ग्रामीण विकास, पंचायती राज, आवास और मत्स्य पालन सहित कई महत्वपूर्ण विभाग शामिल थे। बैठक में गरीबी उन्मूलन, सरकारी योजनाओं के क्रियान्वयन, सुशासन और प्रशासनिक सुधारों पर चर्चा हुई। गृह सचिव गोविंद मोहन ने नक्सलमुक्त भारत को लेकर प्रस्तुति दी और इस खतरे की दोबारा वापसी रोकने के लिए उठाए जा रहे कदमों तथा भविष्य की रणनीति की जानकारी दी। साइबर अपराध और साइबर धोखाधड़ी से निपटने के उपाय भी चर्चा का हिस्सा रहे। प्रधानमंत्री ने मंत्रियों को यह संदेश दिया कि सरकारी योजनाओं का लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुंचना चाहिए। केवल योजनाएं बनाना पर्याप्त नहीं, उनका जमीन पर प्रभाव दिखाई देना चाहिए। विदेश यात्रा से लौटते ही समीक्षा, मोदी की कार्यशैली का स्पष्ट संकेत

हम आपको यह भी बता दें कि प्रधानमंत्री की कार्यशैली का एक महत्वपूर्ण पहलू यह भी है कि अंतरराष्ट्रीय बैठकों और विदेश यात्राओं के बाद वह घरेलू प्रशासनिक प्राथमिकताओं की समीक्षा में देर नहीं करते। मनीला यात्रा से लौटने के तुरंत बाद मंत्रिपरिषद की बैठक बुलाना इसी कार्यशैली का उदाहरण है। दरअसल, इससे मंत्रियों और अधिकारियों को स्पष्ट संदेश जाता है कि अंतरराष्ट्रीय कूटनीति के साथ-साथ घरेलू विकास, सरकारी योजनाओं की गति और प्रशासनिक जवाबदेही पर भी लगातार निगरानी रखनी होगी।

इसके अलावा, आज प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने स्वद्धष्टष्टद्ध के शताब्दी समारोह में भारतीय अर्थव्यवस्था की उपलब्धियों को सामने रखते हुए कांग्रेस नेता राहुल गांधी के 'इकोनॉमिक डिजास्टर' वाले बयान का आंकड़ों के साथ जवाब दिया। भारत मंडपम में आयोजित स्वद्धष्टष्टद्ध के वार्षिक अधिवेशन और शताब्दी सम्मेलन को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि आज भारत दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्था है और लगभग 7 प्रतिशत की विकास दर से आगे बढ़ने का अनुमान है। उन्होंने अक्टूबर महीने में भारत के वस्तु निर्यात के लगभग 50 अरब डॉलर तक पहुंचने का भी उल्लेख किया, जो अब तक का सबसे ऊंचा मासिक आंकड़ा है। प्रधानमंत्री ने अपने संबोधन में विश्व बैंक की रिपोर्ट का हवाला देते हुए कहा कि पिछले 12-13 वर्षों में 50 करोड़ भारतीय गरीबी से बाहर निकले हैं। उन्होंने इसे सही नीतियों और सही नीयत का परिणाम बताया। मोदी ने कांग्रेस के पुराने शासनकाल पर निशाना साधते हुए कहा कि 1970 के दशक में जब 'गरीबी हटाओ' का नारा दिया गया था, तब भारत की आबादी लगभग 50 करोड़ थी। उस समय भी गरीबी समाप्त की जा सकती थी, लेकिन नीतियों में खामी और सही नीयत की कमी रही। देखा जाये तो प्रधानमंत्री का यह बयान राहुल गांधी के उस दावे का सीधा राजनीतिक जवाब है, जिसमें उन्होंने अमेरिका की कोलंबिया यूनिवर्सिटी में भारत को 'इकोनॉमिक डिजास्टर' बताया था। राहुल गांधी ने बेरोजगारी, विनिर्माण क्षेत्र की स्थिति और शिक्षा व्यवस्था को लेकर मोदी सरकार पर सवाल उठाए थे। लेकिन स्वद्धष्टष्टद्ध के मंच से प्रधानमंत्री ने गरीबी उन्मूलन, आर्थिक विकास, निर्यात और अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं के बढ़ते भरोसे के आंकड़े रखकर विपक्ष के आरोपों को चुनौती दी। मोदी ने कहा कि भारत ने एक समय लाइसेंस-कोटा राज और आर्थिक चुनौतियों का दौर देखा है। देश को कभी दुनिया की 'फ्रैजाइल फाइव' अर्थव्यवस्थाओं में गिना जाता था। लेकिन पिछले 12 वर्षों में देश के युवाओं, किसानों, श्रमिकों और उद्योग जगत ने मिलकर इस स्थिति को बदलने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। प्रधानमंत्री ने यह भी बताया कि मूडीज, एसएंडपी ग्लोबल रेटिंग्स, फिच, विश्व बैंक और एशियाई विकास बैंक जैसी अंतरराष्ट्रीय संस्थाएं भारत की आर्थिक संभावनाओं को देखते हुए अपने विकास अनुमानों में सुधार कर रही हैं। यह भारत की अर्थव्यवस्था और उसकी विकास क्षमता पर वैश्विक संस्थाओं के भरोसे का संकेत है। साथ ही स्वद्धष्टष्टद्ध के शताब्दी समारोह में मोदी का संदेश उद्योग जगत के लिए भी स्पष्ट रहा। भारत को 2047 तक विकसित राष्ट्र बनाने के लक्ष्य में निजी उद्योग, निवेश, निर्यात और रोजगार सृजन की भूमिका निर्णायक रहने वाली है। प्रधानमंत्री ने जिस तरह भारत की आर्थिक उपलब्धियों को सामने रखकर राहुल गांधी के आरोपों का जवाब दिया, उससे साफ है कि सरकार विकास के अपने एजेंडे को केवल राजनीतिक नारों से नहीं, बल्कि आर्थिक प्रदर्शन और आंकड़ों के आधार पर जनता के सामने रखना चाहती है। इसके अलावा, यह संबोधन एक तरफ भारत की आर्थिक प्रगति का खाका प्रस्तुत करता है, तो दूसरी तरफ कांग्रेस के उस राजनीतिक नैरेटिव को चुनौती देता है, जिसमें भारतीय अर्थव्यवस्था को संकटग्रस्त बताने की कोशिश की जा रही है।

टीएमसी सांसद महुआ मोइत्रा के काफिले पर हमला, भाजपा समर्थकों पर लगाया आरोप

कोलकाता १९/११ (संवाददाता): तृणमूल कांग्रेस की सांसद महुआ मोइत्रा ने बृहस्पतिवार को आरोप लगाया कि पश्चिम बंगाल के नादिया जिले के कालीगंज में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) समर्थकों के एक समूह ने उनकी कार और काफिले पर पत्थर तथा अंडे फेंके। उन्होंने आरोप लगाया कि कलकत्ता उच्च न्यायालय के आदेश के बावजूद राज्य पुलिस उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करने में विफल रही। कृष्णानगर की सांसद ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर सिलसिलेवार किए कई पोस्ट में दावा किया कि 80-90 भाजपा समर्थक गोबरा ग्राम पंचायत क्षेत्र में उन पर हमला करने के लिए जमा हुए थे।

उन्होंने आरोप लगाया कि पुलिस को इस जमावड़े की पहले से जानकारी थी। मोइत्रा ने पोस्ट किया, ''पश्चिम बंगाल पुलिस, पुलिस महानिदेशक और कृष्णानगर पुलिस का ध्यान इस ओर दिलाना चाहती हूं कि माननीय कलकत्ता उच्च न्यायालय के आदेश के तहत मेरी सुरक्षा की जिम्मेदारी आपकी है। कालीगंज के गोबरा ग्राम पंचायत क्षेत्र में भाजपा के 80-90 गुंडे मुझ पर हमला



करने के लिए इंतजार कर रहे हैं।

आपको इस बारे में सारी जानकारी है।'' उन्होंने पश्चिम बंगाल पुलिस पर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के समर्थकों के साथ मिलीभगत करने और अदालत के आदेश पर की गई सुरक्षा व्यवस्था के बावजूद उन्हें हमला करने देने का आरोप लगाया। तृणमूल सांसद ने कहा, ''उच्चतम न्यायालय के न्यायमूर्ति दीपांकर दत्ता, भारत के प्रधान न्यायाधीश सूर्यकांत और कलकत्ता उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश, यह अदालत की अवमानना का उदाहरण है- जब मेरी सुरक्षा के लिए जवाबदेह पश्चिम बंगाल पुलिस भाजपा के साथ मिलीभगत करके मुझ पर दोबारा हमला करवाती है। तुषार मेहता, आपकी हिम्मत कैसे हुई कि आप अदालत में खड़े होकर इन सबका बचाव करें।

आपको मुझसे निपटना होगा। अब बहुत हो गया।'' एक अन्य पोस्ट में मोइत्रा ने आरोप लगाया कि पुलिस को स्थिति की पहले से जानकारी देने के बावजूद उसने प्रदर्शनकारियों को उनके कार्यक्रम में बाधा डालने दी। उन्होंने 'एक्स' पर पोस्ट किया, ''पुलिस को सारी जानकारी देने के बावजूद उसने भाजपा की इस भीड़ को कार्यक्रम में बाधा डालने और पुलिस सुरक्षा के बीच मेरे काफिले पर हमला करने दिया।

'' घटनास्थल के दृश्यों में प्रदर्शनकारी काले झंडे लहराते और सांसद के काफिले के वहां से गुजरने के दौरान 'वापस जाओ' के नारे लगाते दिखाई दिए।

गोरखपुर में अखिलेश यादव के रोडशो में किशोर की मौत, भाजपा ने सपा पर साधा निशाना

गोरखपुर १९/११ (संवाददाता): उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बृहस्पतिवार को गोरखपुर में समाजवादी पार्टी (सपा) प्रमुख अखिलेश यादव के रोडशो के दौरान 13 साल के एक लड़के की मौत पर सपा की कड़ी आलोचना की। मुख्यमंत्री ने पार्टी को गुंडागर्दी और कानून-व्यवस्था की कमी का पर्याय बताया और जिम्मेदार लोगों के खिलाफ कार्रवाई का वादा किया। समाजवादी पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव ने कहा,''किसी मासूम की हादसे में हुई मृत्यु से हम सब आहत हैं और परिजनों के प्रति गहरी संवेदना प्रकट करते है और अपने लोगों से उस परिवार से मिलकर उनकी हर संभव सहायता करने के लिए कह चुके हैं।'' गोरखपुर जिले के कैंपियरगंज में एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए आदित्यनाथ ने बुधवार की उस घटना का जिक्र किया, जिसमें स्थानीय भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) नेता ओंकार सिंह के बेटे आर्यवर्धन को कथित तौर पर सपा प्रमुख अखिलेश यादव के रोडशो में शामिल एक जेसीबी मशीन ने कुचल दिया था।उन्होंने पूछा, ''उस मासूम लड़के की



उम्र गलती थी, जो मुश्किल से 13 साल का था?'' उन्होंने आरोप लगाया कि सपा ने उस बच्चे को अपने रोडशो का शिकार बना दिया। मुख्यमंत्री ने सपा को गुंडागर्दी, अराजकता, दंगों और कर्फ्यू का पर्याय बताया। उन्होंने आरोप लगाया कि यह पार्टी माफिया तत्वों से जुड़ी हुई है और इसने बार-बार जनता को धोखा दिया है और उनका शोषण किया है। सपा पर निशाना साधते हुए उन्होंने कहा, ''जैसे कुत्ते की पूंछ कभी सीधी नहीं हो सकती, वैसे ही इन गुंडों और माफियाओं को तब तक नहीं सुधारा जा सकता, जब तक कि उन्हें डंडे से सीधा न किया जाए।'' आदित्यनाथ ने कहा कि उनकी सरकार ने गुंडागर्दी पर लगाम लगाई है और अब ऐसे तत्वों पर फिर से सख्ती बरतने की तैयारी कर रही है। उन्होंने आरोप लगाया कि एक अच्छे स्कूल में पढ़ने वाला और अपने परिवार के साथ रहने वाला यह लड़का ''बेहद क्रूर'' तरीके से मारा गया। उन्होंने माफिया और गुंडागर्दी का समर्थन करने वाले उन लोगों की आलोचना की जिन्होंने इस घटना पर संवेदना तक नहीं जताई।

उन्होंने कहा, ''मैं इस मासूम लड़के की मौत पर अपनी संवेदना व्यक्त करता हूं। आज शाम मैं उसके परिवार से भी मिलूंगा और उनके प्रति अपनी सहानुभूति जताऊंगा।'' मुख्यमंत्री ने बताया कि उन्होंने प्रशासन को निर्देश दिया है कि सड़कों पर अव्यवस्था फैलाने वालों की पहचान की जाए और यह सुनिश्चित किया जाए कि उन्हें सजा मिले। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश में सड़कें इसलिए बनाई गई हैं ताकि आम जनता का आना-जाना आसान हो सके, न कि इसलिए कि सपा और कांग्रेस के कार्यकर्ता वहां हंगामा खड़ा करें।

उन्होंने कहा, ''अच्छी सड़कें इसलिए नहीं बनाई गई हैं कि सपा और कांग्रेस के गुंडे आएं और अव्यवस्था फैलाएं। अगर कोई फिर से माफिया जैसा बर्ताव करने की कोशिश करेगा, तो ऐसे माफिया को कुचलने में कोई देरी नहीं की जाएगी।'' आदित्यनाथ ने उन लोगों को भी चेतावनी दी जो जनसमर्थन पाने के लिए जबरन हंगामा खड़ा करने की कोशिश कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश की जनता ने ऐसे लोगों को बार-बार नकारा है और 2027 के चुनाव में भी वे ऐसा ही करने के लिए तैयार हैं। उन्होंने कहा कि महिलाएं और लड़कियां आज बेखौफ होकर आ-जा सकती हैं, क्योंकि उन्हें प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली भाजपा सरकार पर भरोसा है कि वह उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करेगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि जो कोई भी गरीबों की जमीन पर कब्जा करेगा या महिलाओं की सुरक्षा से खिलवाड़ करेगा, उसे ''या तो जेल जाना होगा या फिर नर्क'', इसके अलावा कोई तीसरा विकल्प नहीं है। समाजवादी पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव ने 'एक्स' पर कहा,''किसी मासूम की हादसे में हुई मृत्यु से हम सब आहत हैं और उसके परिजनों के प्रति गहरी संवेदना प्रकट करते है और अपने लोगों से उसके परिवार से मिलकर उनकी हर संभव सहायता करने के लिए कह चुके हैं।'' उन्होंने कहा,''इस दुर्भाग्यपूर्ण हादसे पर राजनीति करने वाले लोग याद रखें कि उन्होंने लखनऊ अग्निकांड में युवा मृतक की दुखी माँ के साथ कैसा दुर्व्यवहार करते हुए उन्हें धमकी दी थी। शोक का नाटक करनेवालों का स्वांग जनता समझ चुकी है। बुधवार को गोरखपुर में किशोर की मौत के बाद उसके परिवार वालों और भाजपा कार्यकर्ताओं ने विरोध प्रदर्शन किया। प्रदर्शनकारियों ने गोरखपुर-देवरिया सड़क को जाम कर दिया और जेसीबी चालक तथा रोडशो के लिए मशीन का इंतजाम करने वालों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की। लड़के के पिता की शिकायत पर बृहस्पतिवार को यहां के अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) स्थित एक पुलिस थाने में 66 लोगों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की गई, जिनमें जेसीबी चालक और रोडशो में शामिल लोग भी शामिल हैं।

आजम खान को सुप्रीम कोर्ट से बड़ी राहत, ईडी की याचिका खारिज, अंतरिम जमानत बरकरार रहेगी

नयी दिल्ली १९/११ (संवाददाता): सुप्रीम कोर्ट ने गुरुवार को मोहमद अली जौहर यूनिवर्सिटी से जुड़ी कथित वित्तीय अनियमितताओं के मामले में समाजवादी पार्टी के नेता आजम खान को मिली अंतरिम जमानत में दखल देने से इनकार कर दिया।

जस्टिस एम.एम. सुंदरेश और जस्टिस पी.बी. वराले की बेंच ने प्रवर्तन निदेशालय (श्वष्ठ) की उस याचिका को खारिज कर दिया, जिसमें इलाहाबाद हाई कोर्ट द्वारा आजम खान को दी गई अंतरिम जमानत को चुनौती दी गई थी।

सुप्रीम कोर्ट ने स्पष्ट किया कि हाई कोर्ट की राय प्रथम दृष्टया थी और इसका अंतिम फैसले पर कोई असर नहीं पड़ना चाहिए। इलाहाबाद हाई कोर्ट ने मनी लॉन्ड्रिंग मामले में खान (78) को अंतरिम जमानत दी। कोर्ट ने माना कि 31 अक्टूबर को जब श्वष्ठ ने उन्हें हिरासत में लिया था, तब वह गिरफ्तारी के लिखित आधार उपलब्ध कराने में विफल रही थी।

इलाहाबाद हाई कोर्ट से मनी लॉन्ड्रिंग मामले में अंतरिम जमानत मिलने के एक दिन बाद, बुधवार को खान गाजियाबाद की डासना जिला जेल से बाहर आए। जेल से रिहा होने पर उनके बेटे अब्दुल्ला खान और समर्थकों ने उनका स्वागत किया।

उन्हें 31 अक्टूबर को श्वष्ठ ने प्रिवेंशन ऑफ मनी लॉन्ड्रिंग एक्ट के तहत गिरफ्तार किया था। यह गिरफ्तारी तब हुई थी, जब वे



कथित तौर पर दो पैन कार्ड रखने के मामले में जमानत मिलने के बाद रामपुर जेल से बाहर ही आए थे। उत्तर प्रदेश के पूर्व मंत्री के खिलाफ यह मामला तब दर्ज किया गया, जब जांच एजेंसी ने उनके और उनके सहयोगियों के खिलाफ दर्ज 50 स्वद्धक्रका संज्ञान लिया। हालांकि, जस्टिस राजीव गुप्ता और जस्टिस देवेंद्र सिंह की खंडपीठ ने खान को जमानत दे दी। कोर्ट ने पाया कि 78 वर्षीय खान को गिरफ्तार करते समय श्वष्ठ ने अनिवार्य प्रक्रिया का पालन नहीं किया था। बाद में, खंडपीठ ने मामले की अगली सुनवाई 10 दिसंबर के लिए तय की और श्वष्ठ को एक हफ्ते के भीतर अपना जवाब दाखिल करने का निर्देश दिया। साथ ही, खान से 10 दिनों के भीतर अपना प्रत्युत्तर जमा करने को कहा।

हाई कोर्ट ने टिप्पणी की, दोनों पक्षों की दलीलों पर विचार करने के बाद, और इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि याचिकाकर्ता को 31 अक्टूबर को एक अन्य मामले में जेल से रिहा होने के तुरंत बाद, जेल गेट पर ही हिरासत में ले लिया गया था - यह साफ तौर पर दिखाता है कि मौजूदा कार्रवाई दुर्भावनापूर्ण और गलत इरादे से की गई है। समाजवादी पार्टी के प्रमुख और पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने हाई कोर्ट की इस टिप्पणी का स्वागत किया है। उन्होंने यह भी कहा कि खान को अदालतों के जरिए न्याय मिलेगा। सुप्रीम कोर्ट ने स्पष्ट किया कि हाई कोर्ट की राय प्रथम दृष्टया थी और इसका अंतिम फैसले पर कोई असर नहीं पड़ना चाहिए। इलाहाबाद हाई कोर्ट ने मनी लॉन्ड्रिंग मामले में खान (78) को अंतरिम जमानत दी। कोर्ट ने माना कि 31 अक्टूबर को जब श्वष्ठ ने उन्हें हिरासत में लिया था, तब वह गिरफ्तारी के लिखित आधार उपलब्ध कराने में विफल रही थी।




विविध समाचार






20 या 21 नवंबर... कब है देवउठनी एकादशी?

चातुर्मास का होगा समापन

हिंदू धर्म में देवउठनी एकादशी का विशेष धार्मिक महत्व है. इसे देवोत्थान एकादशी और प्रबोधिनी एकादशी के नाम से भी जाना जाता है. मान्यता है कि इस दिन भगवान विष्णु चार महीने की योग निद्रा से जागते हैं. इसी के साथ चातुर्मास का समापन हो जाता है और विवाह, गृह प्रवेश समेत तमाम शुभ व मांगलिक कार्यों की शुरुआत हो जाती है. लेकिन इस साल देवउठनी एकादशी की तारीख को लेकर लोगों के बीच कंफ्यूजन की स्थिति बनी हुई है. कुछ जगहों पर यह पर्व 20 नवंबर को बताया जा रहा है तो कुछ जगहों पर 21 नवंबर को.

कब है देवउठनी एकादशी

कार्तिक एकादशी तिथि की शुरुआत: 20 नवंबर, सुबह 7 बजकर 15 मिनट से
कार्तिक एकादशी तिथि का समापन: 21 नवंबर, सुबह 6 बजकर 31 मिनट तक
उदयातिथि और व्रत के नियमों के अनुसार, गृहस्थ यानी स्मार्त परंपरा के श्रद्धालु 20 नवंबर दिन शुक्रवार को देवउठनी एकादशी का व्रत रखेंगे. वहीं वैष्णव संप्रदाय के श्रद्धालुओं के लिए 21 नवंबर को गौण देवउठनी एकादशी का विधान है. इसलिए दोनों तारीखों का उल्लेख पंचांग में मिलता है. देवउठनी एकादशी के दिन ही तुलसी विवाह की भी परंपरा है.

देवउठनी एकादशी पूजन का शुभ मुहूर्त

ब्रह्म मुहूर्त : 05:02 ए एम से 05:55 ए एम
अभिजित मुहूर्त : 11:46 ए एम से 12:29 पी एम
गोधूलि मुहूर्त : 05:26 पी एम से 05:53 पी एम
निशिता मुहूर्त : 11:41 पी एम से 12:35 ए एम, 22 नवंबर
रवि योग: 06:49 ए एम से 06:50 ए एम
इसके अलावा शाम के समय प्रदोष काल में भगवान विष्णु को योग निद्रा से जगाने की परंपरा है. भक्त इस दौरान दीपक जलाते हैं, शंख और घंटियां बजाते हैं तथा भगवान से सुख-समृद्धि की कामना करते हैं.

व्रत का पारण

जो श्रद्धालु 20 नवंबर को एकादशी का व्रत रखेंगे, वे 21 नवंबर 2026 को दोपहर 1 बजकर 11 मिनट से 3 बजकर 18 मिनट के बीच व्रत का पारण कर सकते हैं. पारण से पहले हरि वासर की समाप्ति का ध्यान रखना चाहिए. हरि वासर 21 नवंबर को दोपहर करीब 12 बजकर 7 मिनट पर समाप्त होगा. वहीं 21 नवंबर को गौण एकादशी का व्रत रखने वाले श्रद्धालु 22 नवंबर को सुबह 6 बजकर 49 मिनट से 8 बजकर 56 मिनट तक पारण कर सकते हैं.

क्यों खास है देवउठनी एकादशी

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, भगवान विष्णु आषाढ़ शुक्ल एकादशी को चार महीने के लिए योग निद्रा में चले जाते हैं. इस अवधि को चातुर्मास कहा जाता है. कार्तिक शुक्ल एकादशी पर भगवान विष्णु के जागने के साथ चातुर्मास समाप्त होता है. इस दिन तुलसी विवाह का भी विशेष महत्व है. कई स्थानों पर भगवान शालिग्राम और माता तुलसी का विवाह कराया जाता है. मान्यता है कि देवउठनी एकादशी पर भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी की पूजा करने से घर में सुख-समृद्धि आती है और भक्तों की मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं.

तुलसी विवाह के लिए शुभ मुहूर्त क्या होगा?

देवउठनी एकादशी पर तुलसी विवाह करने की मान्यता है। शास्त्रों के अनुसार, तुलसी विवाह गोधूलि बेला में करने का विशेष महत्व होता है। पंचांग के अनुसार, गोधूलि मुहूर्त शाम 5 बजकर 24 मिनट से लेकर 5 बजकर 53 मिनट तक रहेगा। इस मुहूर्त में तुलसी और भगवान शालिग्राम की पूजा कर सकते हैं।



देवउठनी एकादशी?

होगा चातुर्मास का समापन मांगलिक कार्य होंगे शुरू

कार्तिक माह में शुक्ल पक्ष की ग्यारस के दिन देवउठनी ग्यारस होती है. हिंदू परंपरा के अनुसार इस दिन से सभी शुभ कार्य, शादी, मुंडन, नामकरण संस्कार जैसे कार्य करना बेहद शुभ होता है. इस एकादशी को प्रबोधनी ग्यारस भी कहा जाता है. ये एकादशी दिवाली के 11 दिन बाद आती है.

कार्तिक माह के शुक्ल पक्ष की एकादशी को देवउठनी एकादशी, देवोत्थान एकादशी, देवउठनी ग्यारस, प्रबोधिनी एकादशी आदि नामों से जाना जाता है। इस दिन श्रीहरि विष्णु निद्रा से जागते हैं। आइए जानें कैसे करें व्रत-पूजन :

- देवउठनी एकादशी के दिन व्रत करने वाली महिलाएं प्रात:काल में स्नानादि से निवृत्त होकर आंगन में चौक बनाएं।
- पश्चात भगवान विष्णु के चरणों को कलात्मक रूप से अंकित करें।
- फिर दिन की तेज धूप में विष्णु के चरणों को ढंक दें।
- देवउठनी एकादशी को रात्रि के समय सुभाषित स्त्रोत पाठ, भगवत कथा और पुराणादि का श्रवण और भजन आदि का गायन करें।
- घंटा, शंख, मृदंग, नगाड़े और वीणा बजाएं।
- विविध प्रकार के खेल-कूद, लीला और नाच आदि के साथ इस मंत्र का उच्चारण करते हुए भगवान को जगाएं :

कैसे करें व्रत-पूजन

- पूजन के लिए भगवान का मन्दिर अथवा सिंहासन को विभिन्न प्रकार के लता पत्र, फल, पुष्प और वंदनवार आदि से सजाएं।
- आंगन में देवोत्थान का चित्र बनाएं, तत्पश्चात फल, पकवान, सिंघाड़े, गन्ने आदि चढ़ाकर डलिया से ढंक दें तथा दीपक जलाएं।
- विष्णु पूजा या पंचदेव पूजा विधान अथवा रामार्चनचन्द्रिका आदि के अनुसार श्रद्धापूर्वक पूजन तथा दीपक, कपूर आदि से आरती करें।
- इसके बाद इस मंत्र से पुष्पांजलि अर्पित करें :

'यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन।
तेह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्तिदेवाः'

पश्चात इस मंत्र से प्रार्थना करें : -

'इयं तु द्वादशी देव प्रबोधाय विनिर्मिता।
त्वयैव सर्वलोकानां हितार्थं शेषशायिना'
इदं व्रतं मया देव कृतं प्रीत्यै तव प्रभो।
न्यूनं सम्पूर्णतां यातु त्वत्प्रसादाज्जनार्दन'

साथ ही प्रह्लाद, नारद, पाराशर, पुण्डरीक, व्यास, अम्बरीष,शुक, शौनक और भीष्मादि भक्तों का स्मरण करके चरणामृत, पंचामृत व प्रसाद वितरित करें। तत्पश्चात एक रथ में भगवान को विराजमान कर स्वयं उसे खींचें तथा नगर, ग्राम या गलियों में भ्रमण कराएं।

(शास्त्रानुसार जिस समय वामन भगवान तीन पद भूमि लेकर विदा हुए थे, उस समय दैत्यराज बलि ने वामनजी को रथ में विराजमान कर स्वयं उसे चलाया था। ऐसा करने से 'समुत्थिते ततो विष्णौ क्रियाः सर्वाः प्रवर्तयेत' के अनुसार भगवान विष्णु योग निद्रा को त्याग कर सभी प्रकार की क्रिया करने में प्रवृत्त हो जाते हैं)। अंत में कथा श्रवण कर प्रसाद का वितरण करें।

देवउठनी एकादशी का व्रत कार्तिक माह के शुक्ल पक्ष की एकादशी तिथि को रखा जाता है. इसे हरि प्रबोधिनी एकादशी और देवुत्थान एकादशी के नाम से भी जाना जाता है. देवउठनी एकादशी को चातुर्मास का समापन होता है, साथ ही विवाह, मुंडन, गृह प्रवेश जैसे मांगलिक कार्य पर लगी रोक भी हट जाती है. इस दिन व्रत रखकर भगवान विष्णु की पूजा करते हैं और अगले दिन तुलसी विवाह का भी आयोजन होता है. व्रती अपने घरों में तुलसी के साथ भगवान शालिग्राम का विवाह कराते हैं. इससे सुख और सौभाग्य बढ़ता है.



देवउठनी एकादशी पर इस शुभ मंत्र से जागते हैं देव

देवउठनी एकादशी से भगवान विष्णु जाग्रत होते हैं। पुराणों में वह मंत्र और श्लोक वर्णित है जिसे देव को उठाने के समय बोला जाता है।

देव प्रबोधन मंत्र इस प्रकार है :

ब्रह्मेन्द्ररुद्राग्नि कुबेर सूर्यसोमादिभिर्वन्दित वंदनीय, बुध्यस्य देवेश जगन्निवास मंत्र प्रभावेण सुखेन देव।
अर्थात- ब्रह्मा, इंद्र, रुद्र, अग्नि, कुबेर, सूर्य, सोम आदि से वंदनीय, हे जगन्निवास, देवताओं के स्वामी आप मंत्र के प्रभाव से सुखपूर्वक उठें। हम देवोत्थान हेतु इस प्रकार स्तुति करते हैं :
उदितष्ठोतिष्ठ गोविन्द त्यज निद्रां जगत्पते, त्वयि सुप्ते जगन्नाथ जगत्सुप्तं भवेदिदम।
उत्थिते चेष्टते सर्वमुत्तिष्ठोतिष्ठ माधव।
वास्तव में देव प्रबोधन एकादशी भगवान विष्णु की आराधना का अभिनव अवसर है। देव प्रबोधन एकादशी को प्रातःकाल (ब्रह्म मुहूर्त) में नगर-नगर में भगवान नाम स्मरण, रामधुन (श्रीराम जय राम, जय-जय राम) कीर्तन गाजे-बाजे के साथ बालक, युवा, वृद्ध नर-नारी शामिल होकर नगर परिक्रमा करते हैं तथा आतिशबाजी के साथ देवोत्थान उत्सव मनाते हैं। गृह लक्ष्मी को हाथ में कलश के ऊपर दीप प्रज्ज्वलित कर चलना चाहिए। इससे अत्यधिक पुण्य फल प्राप्त होता है। पुराणों में इस तिथि को संपन्न पूजन कार्य को अत्यधिक फलदायी माना गया है। हरि-जागरण के उपरांत ही शुभ-मांगलिक कार्य प्रारंभ होते हैं।



पवित्र तिथि है देवउठनी एकादशी, इस दिन न करें ये काम

देवउठनी एकादशी अत्यंत पवित्र तिथि है। इस दिन तन-मन-धन की पवित्रता को बनाए रखने के पूरे प्रयास करना चाहिए। यह तिथि इतनी शुभ है कि मन, कर्म और वचन की थोड़ी सी अशुद्धि भी आपके लिए परेशानी का कारण बन सकती है। शास्त्रों में बताया गया है कि एकादशी के दिन कौन से कार्य बिलकुल भी नही करने चाहिए.

जुआ खेलना

जूआ खेलना एक सामाजिक बुराई है। जो व्यक्ति जुआ खेलता है, उसका परिवार व कुटुंब भी नष्ट हो जाता है। जिस स्थान पर जुआ खेला जाता है, वहां अधर्म का राज होता है। ऐसे स्थान पर अनेक बुराइयां उत्पन्न होती हैं। इसलिए सिर्फ आज ही नहीं बल्कि कभी भी जुआ नहीं खेलना चाहिए।

रात में सोना

एकादशी की रात को सोना नहीं चाहिए। पूरी रात जागकर भगवान विष्णु की भक्ति करनी चाहिए। भगवान विष्णु की प्रतिमा या तस्वीर के निकट बैठकर भजन करते हुए ही जागरण करना चाहिए। इससे भगवान विष्णु की कृपा प्राप्त होती है।

पान खाना

एकादशी के दिन पान खाना भी वर्जित माना गया है। पान खाने से मन में रजोगुण की प्रवृत्ति बढ़ती है। इसलिए एकादशी के दिन पान न खा कर व्यक्ति को सात्विक आचार-विचार रख प्रभु भक्ति में मन लगाना चाहिए।

दातून करना

एकादशी पर दातून (मंजन) करने की भी मनाही है। इस निषेध के शास्त्रसम्मत कारण नहीं मिलते हैं।

परनिंदा

परनिंदा यानी दूसरों की बुराई करना। ऐसा करने से मन में दूसरों के प्रति कटु भाव आ सकते हैं। इसलिए एकादशी के दिन दूसरों की बुराई न करते हुए भगवान विष्णु का ही ध्यान करना चाहिए।

चुगली करना

चुगली करने से मान-सम्मान में कमी आ सकती है। कई बार अपमान का सामना भी करना पड़ सकता है। इसलिए सिर्फ एकादशी ही नहीं अन्य दिनों में भी किसी की चुगली नहीं करना चाहिए।

चोरी करना

चोरी करना पाप कर्म माना गया है। चोरी करने वाला व्यक्ति परिवार व समाज में घृणा की नजरों से देखा जाता है। इसलिए सिर्फ एकादशी ही नहीं अन्य दिनों में भी चोरी जैसा पाप कर्म नहीं करना चाहिए।

हिंसा करना

एकादशी के दिन हिंसा करने की मनाही है। हिंसा केवल शरीर से ही नहीं मन से भी होती है। इससे मन में विकार आता है। इसलिए शरीर या मन किसी भी प्रकार की हिंसा इस दिन नहीं करनी चाहिए।

स्त्रीसंग

एकादशी पर स्त्रीसंग करना भी वर्जित है क्योंकि इससे भी मन में विकार उत्पन्न होता है और ध्यान भगवान भक्ति में नहीं लगता। अत: एकादशी पर स्त्रीरांग नहीं करना चाहिए।

क्रोध

एकादशी पर क्रोध भी नहीं करना चाहिए। इससे मानसिक हिंसा होती है। अगर किसी से कोई गलती हो भी जाए तो उसे माफ कर देना चाहिए और मन शांत रखना चाहिए।

झूठ बोलना

झूठ बोलना व्यक्तिगत बुराई है। जो लोग झूठ बोलते हैं, उन्हें समाज व परिवार में उचित मान सम्मान नहीं मिलता। इसलिए सिर्फ एकादशी पर ही नहीं अन्य दिनों में भी झूठ नहीं बोलना चाहिए।

देवउठनी ग्यारस तुलसी विवाह उत्सव



कार्तिक माह में कई बड़े त्योहार मनाए जाते हैं. कार्तिक माह में दिवाली, गोवर्धन पूजा, भाई दूज, चित्रगुप्त पूजा जैसे कई बड़े त्योहार मनाए जाते हैं. कार्तिक माह में शुक्ल पक्ष की ग्यारस के दिन देवउठनी ग्यारस होती है. हिंदू परंपरा के अनुसार इस दिन से सभी शुभ कार्य, शादी, मुंडन, नामकरण संस्कार जैसे कार्य करना बेहद शुभ होता है. इस एकादशी को प्रबोधनी ग्यारस भी कहा जाता है. ये एकादशी दिवाली के 11 दिन बाद आती है. देवउठनी ग्यारस का मतलब होता है कि देवों का उठना. ये एकादशी साल भर की एकादशी में से इसीलिए सबसे महत्वपूर्ण होती है क्योंकि इस दिन से चार महीने पहले भगवान विष्णु व अन्य देवता गण क्षीरसागर में जाकर सो जाते हैं. इसी वजह से देव शयनी एकादशी से लेकर देवउठनी एकादशी के बीच में कोई भी शुभ कार्य नहीं होता हैं. देवउठनी एकादशी से देव उठते हैं. साथ ही जब इस दिन भगवान विष्णु चार महीने के बाद सो कर जगे थें तो तुलसी के पौधे से उनका विवाह होता है. इसीलिए मान्यता है कि तुलसी और विष्णु जी के शालिग्राम रूप का विवाह वाले को कन्यादान करने का पुण्य प्राप्त मिलता है.

इसे देव प्रबोधनी एकादशी या देवउठनी एकादशी को तुलसी विवाह उत्सव भी कहा जाता है. ये त्योहार दिवाली के 11 दिन बाद मनाया जाता है. इसे तुलसी विवाह के रूप में भी जाना जाता है. ये हर साल कार्तिक शुक्ल पक्ष ग्यारस के दिन किया जाता है. इस दिन सुबह सूर्योदय से पहले उठकर स्नान करना होता है. इस दिन व्रत करने की परंपरा है. स्नान करने के बाद सूर्य को अरघ्य दिया जाता है. वैसे तो इस दिन नदी में स्नान करने को बेहद शुभ माना जाता है. ये व्रत एकादशी को शुरू होता है और द्वादश को खोला जाता है. इस दिन तुलसी की पूजा और पूरी विधि विधान के साथ विष्णु जी के रूप शलिग्राम जी से उनका विवाह संपन्न करवाया जाता है. इस दिन तुलसी की पूजा में लोग कन्यादान करते हैं. हिंदू धर्म के अनुसार संसार में यदि सबसे बड़ा कन्यादान है तो वह है कन्यादान. इसीलिए इस दिन लोगों को कन्यादान करने का सौभाग्य भी प्राप्त होता है.

कलिंग समाचार



संपादकीय

दलित क्या पानी पीने के हकदार नहीं

देश में धार्मिक और जातीय भेदभाव के कारण समाज में जो दुश्मनी का माहौल बन गया हैए अब उसमें इसी तरह इंतिकाम यानी बदला लेने की घटनाएं हो रही हैं। तमिलनाडु के पुडुकोट्टई जिले के वेंगईवयाल गांव में एक झकझोरने वाला मामला सामने आया है। इस गांव के बच्चे पिछले कुछ दिनों से बीमार पड़ रहे थे। डाक्टर ने बीमारी का पता लगाने के लिए पानी की जांच करने कहा। गांव में जिस पानी की टंकी से आपूर्ति होती थीए उस पर चढ़कर देखा गया तो पानी पीला नजर आया। जांच के बाद पता चला कि लगभग 10 हजार लीटर वाली इस पानी टंकी में किसी ने बड़ी मात्रा में मानव मल डाल दियाए ताकि पानी दूषित हो जाए। यह अमानवीय कृत्य केवल इसलिए हुआए क्योंकि वेंगईवयाल गांव आज भी दलित विरोधी मानसिकता से जकड़ा हुआ है। एक और चिंताजनक और हैरान करने वाली बात ये है कि यह खबर देते हुए कुछ लोगों ने अनुसूचित या दलित समुदाय के लिए बनी पानी टंकी लिखा है। हमने प्रेमचंद की कहानी ठाकुर का कुआं तो पढ़ी हैए लेकिन आजादी के अमृतकाल में भी अगर दलितों की पानी टंकी पढ़ना पड़ेए तो ये समझना कठिन नहीं है कि आजादी का अमृत केवल सवर्ण.संपन्न तबकों के लिए ही है। गरीब पहले भी गुलाम थेए अब भी उनके हालात गुलामों की तरह ही बदतर हैं। जिस गांव में दलितों के पानी पीने पर भी साजिश रची गईए वहां इस बात का भी खुलासा हुआ है कि यहां जातिगत भेदभाव हर जगह है। गांव में चाय की दुकान पर दलितों के लिए अलग गिलास रखे हुए हैं। दलितों का ये भी कहना है कि उन्हें तीन पीढ़ियों से मंदिर के भीतर प्रवेश की अनुमति नहीं है। पानी टंकी को मानव मल से दूषित करने की शिकायत के बाद जब यहां की जिलाधिकारी कविता रामू और पुलिस अधीक्षक वंदिता पांडे गांव में पहुंचीं तब लोगों ने इन सारे भेदभाव की शिकायत की। बताया जा रहा है कि जिस चाय दुकान में दलितों के लिए अलग गिलास रखने का रिवाज थाए उसके मालिक के खिलाफ शिकायत दर्ज की गई है। दलितों को मंदिर में प्रवेश दिलवाने की पहल भी जिलाधिकारी ने की। उन्होंने कहा कि मंदिर के दरवाजे सभी के लिए खुले होने चाहिए और सभी को यहां दर्शन की अनुमति दी जानी चाहिए। भविष्य में ऐसी घटना ना हो इसके लिए यहां कैमरे लगाए जाएं। जिलाधिकारी दलित समुदाय के लोगों को मंदिर के अंदर ले गईं। लेकिन खबरों के मुताबिक जिस समय जिलाधिकारी और पुलिस अधीक्षक वहां पहुंचीं तो वहां पर पूजा चल रही थीए उसी दौरान कथित रूप से ऊंची जाति की एक महिला ने अपने शरीर में देवता के आने की बात कही और कहा कि नीची जाति के लोगों को मंदिर में प्रवेश नहीं करना चाहिए। अगर यह बात सही है तो फिर यह समझ लेना चाहिए कि जिलाधिकारी की इस स्वागतयोग्य पहल का कोई भविष्य नहीं है। दरअसल जाति की बेड़ियों ने समाज को इस तरह बांधा हुआ है कि उसे टूटने में सदियां लग जाएंगी। वैसे यह विचारणीय है कि वेंगईवयाल गांव में अगर पानी टंकी का दुखद प्रकरण घटित नहीं होताए तो क्या पुडुकोट्टई जिला प्रशासन को दलितों के साथ हो रहे भेदभाव की खबर लग पाती। अगर तीन पीढ़ियों से दलितों को मंदिर प्रवेश नहीं मिला थाए तो यह बात पहले से प्रशासन के संज्ञान में क्यों नहीं थी। जो भेदभाव जिले के एक गांव में हुआ हैए क्या अन्य गांवों.शहरों का भी वही हाल नहीं होगा। दुखद बात ये है कि दलितों के साथ ये अन्याय उस तमिलनाडु में हुआए जो ई वी रामास्वामी पेरियार की जन्मभूमि और कर्मभूमि दोनों रहीं। पेरियार ने पूरी जिंदगी अंधविश्वासए अतार्किकताए रूढ़िवादी विचारों और ब्राह्मणवाद की मुखालफ्त की। उन्हें हिंदू धर्म के खिलाफ बताया जाता हैए लेकिन असल में वे सभी संगठित धर्मों के खिलाफ थे। पेरियार हर तरह के भेदभाव के खिलाफ थेए चाहे वह जाति या धर्म को लेकर हो या फिर लैंगिक आधार पर। इसलिए उन्होंने बाल विवाह के उन्मूलनए विधवा महिलाओं की दोबारा शादी के अधिकारए पार्टनर चुनने या छोड़नेए शादी को इसमें निहित पवित्रता की जगह पार्टनरशिप के रूप में लेनेए आदि के लिए अभियान चलाया था।

भारत की समुद्री सुरक्षा के लिए नौसेना के विस्तार की आवश्यकता

नन्तु बनर्जी

भारतीय नौसेना की वर्तमान बेड़े की ताकत उत्तर कोरियाए कोलंबियाए मिस्रए थाईलैंड और ईरान की तुलना में भी कम है। 2020 तकए भारतीय नौसेना की वास्तविक बेड़े की ताकत की तुलना में पीएलएएन के बेड़े का आकार ;विमान वाहक और पनडुब्बियों सहित 777 युद्धपोतद्ध काफी बड़ा था। अमेरिकी रक्षा विभाग की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि पीएलएएन के कुल बेड़े का आकार श्85 गश्ती लड़ाकों और शिल्प को शामिल नहीं करता है जो एंटी.शिप क्रूज मिसाइल ;एएससीएमद्ध ले जाते हैं।श

भारतीय नौसेना को मजबूत करने के लिए भारत को आने वाले वर्षों में तेजी से पूंजीगत बजट को बढ़ाना होगाए अपने बेड़े को विस्तारित करना होगाए और आधुनिकीकरण की गति तेज करनी होगी ताकि आकार में दुनिया की सबसे बड़ी नौसेना शक्तिए चीन की पीपुल्स लिबरेशन आर्मी नेवी ;पीएलएएनद्ध से हिंद महासागर तथा प्रशांत क्षेत्र में बढ़ते खतरों का मुकाबला किया जा सके। सरकार को इस तथ्य को स्वीकार करना चाहिए कि पीएलएएन भारतीय नौसेना से चार गुना बड़ा और मजबूत है। यह सच है कि इस वित्तीय वर्ष में पहली बार भारतीय नौसेना का पूंजीगत व्यय लक्ष्य 45 प्रतिशत तक बढ़ाया गया हैए परन्तु आगे भी इसे बढ़ाने की आवश्यकता है।

पिछले साल के 21000 करोड़ की तुलना में 2022.23 के लिए अकेले जहाजों और उपकरणों के लिए बजट आबंटन 35ए452 करोड़ रुपये था। कुल पूंजी परिव्यय का 75 प्रतिशत इसके बेड़े के लिए निर्धारित किया गया हैए जिसमें युद्धपोतए पनडुब्बी और अन्य उपकरण शामिल हैं। देश के नौसैनिक बल को 2023.24 और उसके बाद भी इसी तरह के बजट की जरूरत है। भारतीय नौसेना को इस क्षेत्र में बढ़ते पीएलएएन के खतरे का सामना करने के लिए अपनी क्षमता को मजबूती से बढ़ाने की आवश्यकता हैए विशेष रूप से भारत के तीन महासागर साझा करने वाले पड़ोसियों–बांग्लादेशए श्रीलंका और पाकिस्तान के साथ उसके बढ़ते सैन्य गठबंधन के संदर्भ में।

दुर्भाग्य सेए भारतीय नौसेना को वह प्राथमिकता नहीं मिलीए जिसकी वह पहले के वर्षों में सरकार से हकदार थी। भारतीय नौसेना की वर्तमान बेड़े की ताकत उत्तर कोरियाए कोलंबियाए मिस्रए थाईलैंड और ईरान की तुलना में भी कम है।

2020 तकए भारतीय नौसेना की वास्तविक बेड़े की ताकत की तुलना में पीएलएएन के बेड़े का आकार ;विमान वाहक और पनडुब्बियों सहित 777 युद्धपोतद्ध काफी बड़ा था। अमेरिकी रक्षा विभाग की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि पीएलएएन के कुल बेड़े का आकार 85 गश्ती लड़ाकों और शिल्प को शामिल नहीं करता है जो एंटी.शिप क्रूज मिसाइल ;एएससीएमद्ध ले जाते हैं।श

आने वाले वित्तीय वर्षों में भारतीय नौसेना के लिए एक ब पर बजट आबंटन मौजूदा जहाजों और पनडुब्बियों को आधुनिक बनाने में मदद करेगा और इसके बेड़े के आकार को भी बढ़ायेगा क्योंकि चीन अपनी नौसैनिक पहुंच को और बढ़ा देगा। अमेरिकाए जापान और ऑस्ट्रेलिया जैसी अत्याधुनिक नौसैनिक शक्तियों के साथ भारत की बढ़ती भागीदारी–चतुर्भुज सुरक्षा संवाद ;क्वाडद्ध के सभी सदस्य.बहुत कम मूल्य की होगी यदि भारतीय नौसेना स्वयं पर्याप्त मजबूत नहीं है। हालांकि अमेरिकी बेड़े का आकार ;490 जहाजद्ध चीन की तुलना में छोटा हैए यह घातक शक्ति में पीएलएएन की तुलना में काफी मजबूत है। वास्तव मेंए अमेरिकी नौसेनाए मारक क्षमता के मामले मेंए विमान वाहक और पनडुब्बियों की बेजोड़ ताकत के साथ सबसे आधुनिक और बहुमुखी मानी जाती है।

वर्ल्ड डायरेक्टरी ऑफ मॉडर्न वारशिप्स 2023 अमेरिकी नौसेना को दुनिया की सबसे मजबूत नौसैनिक शक्ति मानती हैए इसके बाद पीएलएएन, रूसी नौसेना, इंडोनेशियाई नौसेना, कोरिया गणराज्य की नौसेना, जापान समुद्री आत्मरक्षा बल और भारतीय नौसेना का स्थान है। अमेरिकी नौसेना के पास 11 विमान वाहकए 10 हेलीकॉप्टर वाहकए 68 पनडुब्बी और 92 विध्वंसक हैं। केवल पीएलएएन के पास अधिक पनडुब्बियां ;79द्ध हैं।

रूस में 64 पनडुब्बियां हैं। चीन के 50 और रूस के 15 के मुकाबले अमेरिका के पास 92 विध्वंसक हैं।

हालांकि ये अनुमान हमेशा अन्य वैश्विक श्नेवल वॉचश् रिपोर्ट से मेल नहीं खाते। इसके अलावाए श्सबसे बड़े श् नौसैनिक बलों का मतलब श्सबसे शक्तिशालीश् बलों से नहीं है।

विभिन्न श्नौसेना निगरानीश् एजेंसियां इस बारे में विपरीत दिशानिर्देश देती हैं कि वे किस प्रकार के जहाज को किसी देश की नौसेना का हिस्सा मानते हैं। उदाहरण के लिएए चीन की नौसेना में इससे100 से अधिक होवरक्रा ट शामिल हैंए जिन्हें नौसैनिक जहाज माना भी जा सकता है और नहीं भी। आधुनिक नौसैनिक बल अक्सर न केवल सक्रिय ड्यूटी पर कमीशन किये गये जहाजों को शामिल करते हैंए बल्कि गैर.कमीशन वाले जहाजोंए सहायक जहाजोंए आरक्षित बेड़े और यहां तक कि निर्माणाधीन जहाजों को भी शामिल करते हैं। ऐसी गणनाओं में हो सकता है किसी देश की नौसेना के जहाजों की सं या पर प्रभाव का अनुमान है।

आधिकारिक रिपोर्टों के अनुसारए भारतीय नौसेना के पास 150 युद्धपोत और पनडुब्बियांए चार ईंधन टैंकरए एक जवाबी पोतए 24 जलपोतए पनडुब्बीरोधी युद्धक उथले जल जहाज, 17 हमलावर पनडुब्बियांए एक बैलिस्टिक मिसाइल पनडुब्बीए 14 फ्रिगेट, 10 विध्वंसक, तथा 300 विमान हैं। आठ लैंडिंग शिप टैंकए एक उभयचर परिवहन डॉकए दो विमान वाहकए विभिन्न छोटी पेट्रोल नौकाएंए पूरक जहाज भी हैं। भारतीय नौसेना के पास लगभग 75000 रिजर्व और 67000 से अधिक सक्रिय कर्मी हैं। इसके पास अंडमान और निकोबार द्वीप समूहए पश्चिम बंगालए आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, ओडिशा, केरल, लक्षद्वीप, महाराष्ट्रए गोवाए कर्नाटक और गुजरात में पूरी तरह से सुसज्जित और प्रशिक्षण आधार हैं।

इन आधारों से गोला.बारूद समर्थनए रसद और रखरखाव सहायताए समुद्री कमांडो आधारए वायु स्टेशनए आगे संचालन आधारए पनडुब्बी और मिसाइल नाव आधारए मिसाइल रक्षा और तटीय रक्षा प्रदान करने वाले हैं। भारत की नौसेना जल्द ही एक मजबूत वैश्विक नौसैनिक शक्ति बनने की आकांक्षा रखती है।

नेशनल इन्टरेस्ट डॉट ऑर्ग पर सैन्य विश्लेषकों की 2021 की एक रिपोर्ट में 2030 में दुनिया की पांच शीर्ष नौसेनाओं का अनुमान लगाया गया है। दिलचस्प बात यह है कि इसने भारतीय नौसेना को रूस से आगे चौथे स्थान पर रखा। यह रिपोर्ट अगले आठ वर्षों में भारतीय नौसेना के विस्तार के बारे में अति.आशावादी है। अमेरिकी नौसेना नंबर 1 हैए उसके बाद ब्रिटिश नौसेना और चीनी नौसेना है। विश्लेषकों को उ मीद है कि टन भार और तकनीकी प्रगति के बेजोड़ संयोजन के कारण अमेरिका प्रमुख वैश्विक नौसैनिक शक्ति बना रहेगा।

अमेरिकी नौसेना के पास न केवल बहुत से जहाज़ हैंए बल्कि इसके पास कई विशालए अत्याधुनिक जहाज़ भी हैं। यूके के जहाजों की कुल सं या में कमी आने की उ मीद है। दो नये विमान वाहकों को जोड़ने और इसके पनडुब्बी बेड़े में वृद्धि से ब्रिटेन को नंबर 2 समुद्री शक्ति के रूप में स्थापित होना चाहिए।

रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत अपनी नौसैनिक उपस्थिति का विस्तार कर रहा है और उसके पास 2030 तक तीन ऑपरेटिंग विमान वाहक होने चाहिएए जो सामूहिक रूप से 110.120 विमानों को तैनात करने में सक्षम हों। आधिकारिक रिपोर्टों से पता चलता है कि भारतीय नौसेना के पास विभिन्न प्रकार के 45 पोत निर्माणाधीन हैं।

इनमें विध्वंसक, फ्रिगेट, जलपोत, पारंपरिक और परमाणु.संचालित पनडुब्बियां शामिल हैं। योजना 2050 तक 200 युद्धपोतों और 500 विमानों की एक मजबूत नौसेना बनाने की है। चीन की आक्रामक मुद्रा और भारत.प्रशांत क्षेत्र में बढ़ते तनाव को देखते हुए समय सीमा काफी लंबी प्रतीत होती है। सरकार को वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिक बने रहने के लिए अपने विस्तार कार्यक्रम में तेजी लाने के लिए भारतीय नौसेना को वार्षिक पूंजीगत व्यय निधि सहायता जारी रखनी चाहिए।

तू नया है तो दिखा सुबह नई शाम नई

वर्षा भम्भाणी मिर्जा

इस हिंसा को उकसाते हुए सभी लड़कियों के साथ लड़कों की भी सुरक्षा भूल रहे हैं या इन अपराधों से आंखें मूंदे हुए हैं। बलात्कार के चालीस फीसदी केस वास्तव में बलात्कार के नहीं होते। ये वे मामले हैं जिनमें परिवार उन पुरुषों को बलात्कार के इल्ज़ाम में मुकदमे दायर करता है जिनसे परिवार की बेटियां या तो शादी कर चुकी होती हैं या करना चाहती हैं। परिवार हर कीमत पर इन शादियों को निरस्त कर लड़की को बरामद करना चाहते हैं। क्या यह महज संयोग है कि भारतीय जनता पार्टी से जुड़ी दो स्त्रियां जिनमें एक सांसद और दूसरी मंत्री हैंए एक ही समय में कहती हैं कि श्आत्मरक्षा के लिए हथियार रखो और अपने घर में रखे सब्जी काटने वाले चाकू की धार इतनी तेज़ करा लो ताकि वक्त आने पर दुश्मन के सर काट सकोष्श् किसके लिए करने हैं ये हथियार धारदारघ् क्या किसी भी बंदूक की गोली या हथियार पर लिखा होता है कि वह किसकी जान लेगीघ् क्या यह तय है कि ये हथियार चुन.चुनकर निशाना साधेंगे और समाज में हिंसा के बाद फिर संस्कार पर लौट आएगाघ् क्या ऐसे संस्कारित होंगी देश की लड़कियां जिनकी बात सांसद महोदया करती हैंघ् आखिर क्यों ज़ि मेदार पदों पर बैठे इन लोगों को संसदए सरकार और देश की व्यवस्था से कोई उ मीद नहीं है जो ये भीड़ को उकसा.उकसाकर हिंसक हो जाने के लिए कह रहे हैंघ

देश के कानून में ऐसी नफ़रती और घृणा फैलाने वाली भाषा के लिए कोई जगह नहीं हैए लेकिन फिर भी शासन.प्रशासन सब मूक बने हुए हैं और जो कोई एफ्आईआर कराना भी चाहता है तो क्षेत्र का एसपी कहता है कि आपको थाने आना पड़ेगा। यानी सबकी कोशिश है कि ऐसी घृणित बयानबाज़ी करने वालों को पूरा संरक्षण देना हैए कवच प्रदान करना है। क्या यह संरक्षण तब भी मिलेगा जब संसद किसी अलग दल और अलग पार्टी का होघ् शायद नहीं! ऐसे वक्त में तमाम व्यवस्था सही दिशा में काम करने लगती है। अपने लिए मनमानी और दूसरों के लिए क़ानूनी। क्या ऐसे ही दृश्यों का साक्षी नहीं हो रहा है देश इन दिनोंघ् भोपाल की सांसद प्रज्ञा ठाकुर कर्नाटक के शिमोगा में और मध्यप्रदेश की पर्यटन मंत्री उषा ठाकुर भोपाल में कह जाती हैं कि श्आत्मरक्षा के लिए हथियार रखो।श

सिलसिला चल पड़ा है और अब मध्यप्रदेश के एक और भारतीय जनता पार्टी के विधायक रामेश्वर शर्मा ने भी यही घोषणा बुलंद कर दी है। प्रज्ञा ठाकुर तो पहले भी अपने बयानों से प्रधानमंत्री मोदी को दुखी कर चुकी हैं। प्रज्ञा पहले महात्मा गांधी के हत्यारे नाथूराम गोड़से को देशभक्त बता चुकी हैं। तब प्रधानमंत्री ने कहा था कि श्भले ही नाथूराम गोड़से को देशभक्त बताने की बात पर प्रज्ञा माफी मांग चुकी हो लेकिन मैं उन्हें कभी हृदय से क्षमा नहीं कर पाऊंगा।श् अब प्रज्ञा हैं कि दुख बढ़ाती ही चली जा रही हैं। मुंबई बम विस्फोट में शहीद महाराष्ट्र के एटीएस चीफ हेमंत करकरे के लिए प्रज्ञा कहती हैं. श्वे अपने शाप की वजह से मरे।श् करकरे चाहते तो मुंबई पर आतंकी हमले के वक्त नीचे आर्डर पास कर सकते थे लेकिन उन्होंने मोर्चा खुद संभाला।

अपेक्षाकृत कमज़ोर बुलेटप्रुफ हेलमेट जो उनका नहीं था और रायफल के साथ मैदान में कूद पड़े। सीने पर गोलियां खाईं। ये तथ्य उस समय की तमाम मीडिया रिपोर्ट्स में हैं। वही हेमंत करकरे मालेगांव बम विस्फोट कांड की भी जांच कर रहे थे जिसमें प्रज्ञा सिंह ठाकुर एक आरोपी थीं। सवाल यही है कि पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद का मुखर विरोध करने वाली पार्टी यहां जान की बाज़ी लगा देने वालों के लिए पूर्वाग्रही कैसे हो जाती हैय और फिर यह कैसा दर्द है जो उन्हीं प्रज्ञा को 2019 में भोपाल से लोकसभा का टिकट दिलवा देता हैए उन्हें सांसद बना देता है। आप कहेंगे कि सांसद तो जनता ने बनाया। उसने जिताया बेशक जनता जो वोट देती हैए ज़ि मेदार है। यहां इस क्रोनोलॉजी पर भी निगाह डालने की ज़रूरत है कि गुजरात में जो बिलकिस बानो दंगों के दौरान बलात्कार और परिजनों की हत्या का शिकार होती हैं उसके सजाया ता अपराधी रिहा कर दिए जाते हैं और जो सांसद कहती हैं कि श्अपनी बेटियों को सुरक्षित रखोए अपनी बेटियों को संस्कारित करोए अपने घर में हथियार रखोए कुछ नहीं तो सब्जी काटने वाला चाकू ज़रा तेज रखो! स्पष्ट बोल रही हूं कि हमारे घरों में भी सब्ज़ी काटने के लिए जो चाकू है उसे तेज़ रखो। जो सब्जी अच्छे से कटेगी तो दुश्मनों के सर भी अच्छे से कटेंगे।

उन्होंने हमारे कार्यकर्ताओं को चाकू से गोदा हैण्ण्।श् सरेआम हिंसा के लिए उकसाने वाले इस वक्तव्य में एक और बात अन्तर्निहित है कि अगर लड़कियां कभी अपने मन की करें तो उन्हें रोकने में आप हिंसा करने में ज़रा भी संकोच ना करें। इस तरह के धारदार चाकू दुश्मनों पर कितने चल रहे हैं उसका तो आंकड़ा फ़िलहाल नहीं है लेकिन प्रेम करने वाली लड़कियां मारी जा रही हैंए काटी जा रही हैं और इतने संताप में हैं कि खुदकुशी भी कर रही हैं। हाल ही में एक अभिनेत्री की आत्महत्या की वजह उसका वह रिश्ता था जिसमें श्रद्धा और आफ़ताब के प्रकरण का डर बैठने के बाद उनके रिश्ते में तनाव आ गया था। ऐसे उकसाने वाले भाषणों से परिवार और समाज में लड़कियों का जीना मुश्किल हो रहा है।

ऑनर किलिंग के नाम पर परिवार अपने बच्चों के साथ हिंसा से भी नहीं चूक रहे। व्यवस्था न केवल चुप रहकर सब देख रही है बल्कि बीच.बीच में ताली भी पीट देती है। यह हरकत किसी के दर्द में ढोल बजाने से भी बुरी मालूम होती है। बाईस साल की निरुपमा पत्रकार थी और प्रियभान्शु रंजन नाम के हमपेशा लड़के को हमसफ़र बनाना चाहती थी। लड़की ब्राह्मण और लड़का कायस्थ। दोनों दिल्ली में थे। छोटे शहरों से झोला उठाकर चलने वाले लड़के.लड़कों में माता.पिता तमाम वाब भर देते हैं लेकिन उसका अहम हिस्सा अपने कब्ज़े में रखना चाहते हैं। खूब पढ़ोए अच्छा जॉब चुनोए ज्यादा कमाओ लेकिन जीवनसाथीघ् वह मत चुनो। बेटी को खुला आसमान देने वाले पढ़े.लिखे अभिभावक भी यहां पहुंचकर उनके पंख कतरना चाहते हैं। झुमरीतलैयाए बिहार की निरुपमा के साथ भी यही हुआ।

पुलिस ने परिजनों को गिर तार करते हुए आरोप लगाया कि उसने खुदकुशी नहीं कीए उसकी गला दबाकर हत्या की गयी थी। वह दस ह ते के गर्भ से थी। दरअसलए हर मध्यमवर्गीय भारतीय परिवार बच्चों की शादी के ज़रिये यह साबित करते हैं कि हमारे बच्चों पर हमारी कितनी नकेल है। अपने बच्चों को जी.जान से पालने वाले आखिर इतने कटु और स त क्यों हो जाते हैंघ् इसलिए क्योंकि नेता और इनकी व्यवस्था इन बच्चों की रक्षा करने का आश्वासन नहीं देतीघ् सब जानते हैं कि विशेष विवाह अधिनियम कमज़ोर किया जा रहा है।

इस हिंसा को उकसाते हुए सभी लड़कियों के साथ लड़कों की भी सुरक्षा भूल रहे हैं या इन अपराधों से आंखें मूंदे हुए हैं। बलात्कार के चालीस फीसदी केस वास्तव में बलात्कार के नहीं होते। ये वे मामले हैं जिनमें परिवार उन पुरुषों को बलात्कार के इल्ज़ाम में मुकदमे दायर करता है जिनसे परिवार की बेटियां या तो शादी कर चुकी होती हैं या करना चाहती हैं। परिवार हर कीमत पर इन शादियों को निरस्त कर लड़की को बरामद करना चाहते हैं और लड़कों को सलाखों के पीछे डालना चाहते हैं। ये लड़कियां कभी घरों में कैद कर दी जाती हैं तो कभी नारी निकेतनों में। यह सोच ही बहुत बचकानी है कि लड़कियां सुरक्षित हो जाएंगी। वह परिवार जिसका बेटा महज़ प्रेम करने के जुर्म में बलात्कार या अपहरण की सज़ा भुगत रहा होगा क्या वह चैन से जी सकता हैघ

भीड़ को उकसाने वाले इसका जवाब देंगे। कैसा अकेला और डरा हुआ समाज होगा वह जहां प्रेम और सद्भाव का पूरी तरह अभाव होगा और हर बेटी के मां.बाप केवल चाकू की धार तेज करने में ही लगे होंगे। जिन विचाराधीन कैदियों से भारत की जेलें भरी पड़ी हैं उनमें बड़ी सं या में ऐसे लड़के हैं और बाहर घुटन में जीतीं वे लड़कियांए समझौते का जीवन गुज़ारती हुई। जात.बिरादरी से दूरी और नफ़रत ने समूचे समाज के सद्भाव में गहरा घाव कर दिया है और ये नेता जब.तब इस घाव को कुरेदते रहते हैं।

हैरत की बात है कि राजनीतिक दल ने घृणा की यह भाषा महिला नेताओं के हिस्से में डाल दी हैए वह भी निर्वाचित नेता के। क्या यह भी सोचा समझा हुआ है कि सद्भावना और प्रेम में यकीन रखने वाली स्त्री के मुख से ऐसी कटु बातें कहलवाई जाएं। भारत की सबसे बड़ी और लोकप्रिय पार्टी को आखिर क्यों इन हिंसक भाषणों का सहारा लेना चाहिएघ् क्या उसे अपनी लोकप्रियता पर शक है या उसकी इस लोकप्रियता का आधार कमज़ोर हैघ् जब सत्ता इस कदर असुरक्षित रहेगी तो नागरिक को उसके सुरक्षित रखने का आश्वासन राज्य की ओर से कैसे दिया जा सकता हैघ् क्या जनता नए साल में अपने लिए कुछ बेहतर और नए की उ मीद कर सकती। फ़ैज़ा लुधियानवी का शेर है.

तू नया है तो दिखा सुबह नईए शाम नई

वरना इन आंखों ने देखे हैं नए साल कई।।



विविध समाचार



रेवाड़ी में 59 लाख की ठगी : प्रॉपर्टी के नाम पर कंपनी कर्मी से लोन लेकर हड़पी रकम

रेवाड़ी। रेवाड़ी शहर में एक कंपनी कर्मी से 59 लाख रुपये की ठगी का मामला सामने आया है। आरोप है कि प्रॉपर्टी दिलाने के नाम पर उसके दस्तावेजों का दुरुपयोग कर विभिन्न बैंकों से लोन लिया गया और पूरी रकम हड़प ली गई। पुलिस ने शिकायत के आधार पर 9 बैंकों के अधिकारियों सहित 12 लोगों के खिलाफ धोखाधड़ी समेत विभिन्न धाराओं में मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। फिलहाल किसी आरोपी की गिरफ्तारी नहीं हुई है। पुलिस को दी शिकायत में रेवाड़ी निवासी डीके ने बताया कि वह बावल स्थित एक कंपनी में कार्यरत है। 19 अक्टूबर 2024 को उसकी मुलाकात



कंपनी के एक सहकर्मी के माध्यम से गढ़ी बोलनी रोड स्थित एक सोसायटी में रहने वाले राकेश और अनिल से हुई। राकेश ने खुद को रियल एस्टेट कारोबारी बताते हुए प्रॉपर्टी में निवेश का प्रस्ताव दिया। पीड़ित के अनुसार, शुरुआत में आरोपियों ने धारूहेड़ा की एक कंपनी के जरिए लोन लेकर रकम अपने खाते में ट्रांसफर करने और बदले में प्लॉट की रजिस्ट्री कराने की बात कही, जिसे उसने ठुकरा दिया। इसके बाद आरोपियों ने उसके दस्तावेज लेकर 20 लाख रुपये का लोन दिलाने का झांसा दिया, लेकिन उसकी जानकारी के बिना आठ बैंकों में आवेदन कर दिया। 30 अक्टूबर से 5 नवंबर 2024 के बीच आरोपियों ने आठ बैंकों से उसके नाम पर कुल 59,19,513 रुपये का लोन ले लिया। जब पीड़ित को इस बारे में पता चला और उसने विरोध किया तो आरोपियों ने खुद ईएमआई भरने का आश्वासन दिया। इसी दौरान राकेश ने सुरक्षा के नाम पर उसके चेक भी अपने पास रख लिए। आरोप है कि इन चेकों का दुरुपयोग कर 30 अक्टूबर से 7 नवंबर के बीच पीड़ित के खाते से करीब 59 लाख रुपये निकाल लिए गए। 14 नवंबर को आरोपियों ने 750 वर्गगज में से 400 वर्गगज जमीन उसके नाम कर दी और बाकी जल्द दिलाने का वादा किया। बाद में जांच में पता चला कि उक्त जमीन पर पहले से ही किसी अन्य व्यक्ति का कब्जा है।

पीड़ित के अनुसार, राकेश ने शुरुआत में 13 किस्तें जमा करवाईं, लेकिन बाद में फ्लैट बेचकर फरार हो गया। 12 दिसंबर 2025 को राकेश ने लोन चुकाने के लिए फरवरी 2026 की तारीख वाले 35 लाख और 33,99,167 रुपये के दो चेक दिए, जो बैंक में लगाने पर बाउंस हो गए। पीड़ित ने आरोप लगाया है कि राकेश पहले भी करीब 30 लोगों के साथ इसी तरह की ठगी कर चुका है। मामले में कसौला थाना पुलिस ने राकेश, अनिल और ममता समेत संबंधित बैंक अधिकारियों के खिलाफ केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

हिमाचल में 7 नए स्वचालित परीक्षण केंद्रों को मंजूरी, वाहन जांच होगी तेज

शिमला। हिमाचल प्रदेश में वाहन जांच व्यवस्था को आधुनिक बनाने की दिशा में बड़ा कदम उठाते हुए केंद्र सरकार ने सात स्वचालित परीक्षण केंद्र (एटीएस) स्थापित करने की स्वीकृति दी है। यह जानकारी उपमुख्यमंत्री मुकेश अग्निहोत्री ने विधानसभा में दी। उन्होंने बताया कि कांगड़ा, मंडी, बिलासपुर, नालागढ़ और पांवटा साहिब में निजी क्षेत्र के एटीएस स्थापित किए जाएंगे, जबकि हरोली और नादौन में सरकारी एटीएस बनाए जाएंगे। इन केंद्रों पर वाहनों की जांच मात्र 5 से 10 मिनट में पूरी हो सकेगी और ऑनलाइन स्लॉट बुकिंग की सुविधा भी उपलब्ध होगी। यह मामला उपमुख्य सचेतक केवल सिंह पठानिया द्वारा नियम–62 के तहत विधानसभा में उठाया गया था। पठानिया ने कहा कि कांगड़ा जिले में फिलहाल केवल एक एटीएस होने के कारण लोगों को लंबी कतारों और यातायात जाम जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। इस पर उपमुख्यमंत्री ने आश्वासन दिया कि भविष्य में वाहन पासिंग की प्रक्रिया इन्हीं केंद्रों के माध्यम से की जाएगी। मुकेश अग्निहोत्री ने बताया कि राज्य के प्रयासों की सराहना करते हुए केंद्र सरकार ने 100 करोड़ रुपये की प्रोत्साहन राशि जारी की है। साथ ही एटीएस स्थापना के लिए 6.75 करोड़ रुपये मिल चुके हैं और भविष्य में 27.73 करोड़ रुपये अतिरिक्त मिलने की संभावना है। विधानसभा में दी गई जानकारी के अनुसार, जल शक्ति विभाग में कनिष्ठ अभियंताओं के कुल 325 पद रिक्त हैं। इनमें 302 सिविल, 9 मैकेनिकल और 14 इलेक्ट्रिकल श्रेणी के पद शामिल हैं। ये पद मंडल, जोन और अन्य कार्यालयों में खाली हैं। सरकार ने बताया कि सिविल विंग के 116 पदों को सीधी भर्ती के माध्यम से भरने के लिए 4 और 17 फरवरी को भर्ती निदेशालय को अधियाचन भेजा गया है। इसके अलावा, दो पद भूतपूर्व सैनिकों के आश्रितों के लिए भरे जाएंगे। इलेक्ट्रिकल के 14 पदों को भरने का प्रस्ताव अभी विचाराधीन है। सरकार के अनुसार, विभागों, बोर्डों और निगमों में करुणामूलक आधार पर नौकरी के 852 मामले लंबित हैं, जिनमें से 98 को अस्वीकार किया जा चुका है। यह जानकारी विधायकों सुधीर शर्मा, सत्तपाल सत्ती और पवन काजल के प्रश्न के लिखित उत्तर में दी गई। सरकार ने बताया कि 8 अक्टूबर 2025 से करुणामूलक नियुक्ति के लिए परिवार की वार्षिक आय सीमा 2.50 लाख रुपये से बढ़ाकर 3 लाख रुपये कर दी गई है। यह नई सीमा भविष्य के मामलों पर लागू होगी। उपमुख्यमंत्री ने बताया कि हिमाचल प्रदेश में वाहनों की संख्या लगातार बढ़ रही है। वर्ष 1990–91 में जहां केवल 67,103 वाहन पंजीकृत थे, वहीं अब यह संख्या बढ़कर 24,82,038 हो गई है। इनमें 21,83,860 निजी और 2,98,178 वाणिज्यिक वाहन शामिल हैं। उन्होंने बताया कि वर्ष 2025 में प्रदेश में 1,923 सड़क दुर्घटनाएं हुईं, जिनमें 789 लोगों की मौत हुई। इन दुर्घटनाओं का एक प्रमुख कारण खराब या अयोग्य वाहन हैं। 18 मार्च 2026 तक एटीएस के माध्यम से 572 वाहनों को फिट और 6 को अनफिट घोषित किया जा चुका है। सरकार का मानना है कि नए एटीएस केंद्रों की स्थापना से सड़क सुरक्षा में सुधार होगा और वाहन जांच प्रक्रिया अधिक पारदर्शी बनेगी।

संसद में पंजाब के बजाय समोसे की बात करते हैं राघव चड्ढा

चंडीगढ। पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान ने शुक्रवार को एक प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान आम आदमी पार्टी के राज्यसभा सांसद राघव चड्ढा पर जमकर निशाना साधा है। राघव चड्ढा को राज्यसभा में पार्टी के उपनेता पद से हटाए जाने और उनके द्वारा जारी किए गए वीडियो संदेश पर प्रतिक्रिया देते हुए सीएम मान ने स्पष्ट किया कि चड्ढा ने संसद में कभी भी पंजाब के असली मुद्दे नहीं उठाए। मुख्यमंत्री का यह कड़ा बयान ऐसे समय में आया है, जब आम आदमी पार्टी के भीतर अंदरूनी कलह और राघव चड्ढा को किनारे किए जाने की खबरें सियासी गलियारों में लगातार सुर्खियों में हैं। प्रेस कॉन्फ्रेंस में पत्रकारों द्वारा राघव चड्ढा के वीडियो के संबंध में पूछे गए सवाल का जवाब देते हुए मुख्यमंत्री मान ने कहा कि राघव किसी अन्य स्टेशन (मंच) से बोले हैं, इसलिए इस बात का जवाब भी वही बेहतर तरीके से दे सकते हैं। मुख्यमंत्री ने उन पर तीखा तंज कसते हुए कहा कि एक सांसद के रूप में राघव चड्ढा ने कभी भी पंजाब के हकों की बात नहीं की। मान ने सीधा आरोप लगाया कि केंद्र सरकार द्वारा पंजाब के रोके गए हजारों करोड़ रुपये के फंड के बारे में राघव ने संसद में कभी कोई सवाल नहीं पूछा, लेकिन समोसे जैसे गैर–जरूरी मुद्दों को संसद में जरूर उठाया। मुख्यमंत्री ने पार्टी के अंदरूनी फैसलों का बचाव करते हुए स्पष्ट किया कि संसद में नेता और उपनेता बदलना एक बहुत ही सामान्य प्रक्रिया है। उन्होंने कहा कि पार्टी के अंदर इस तरह के संगठनात्मक बदलाव समय–समय पर होते रहते हैं। इसके साथ ही सीएम मान ने एक बड़ा इशारा करते हुए यह भी स्पष्ट कर दिया कि यदि कोई भी नेता पार्टी लाइन से अलग होकर चलता है या अनुशासनहीनता करता है, तो उसके खिलाफ कार्रवाई जरूर होती है।

प्रकृति के नियमों के विपरीत है अंतरात्मा की आवाज को दबाना

शांति की संस्कृति को बढ़ावा देने के उद्देश्य से प्रतिवर्ष 5 अप्रैल को अंतर्राष्ट्रीय अंतरात्मा दिवस मनाया जाता है।आज के इस उथल–पुथल भरे समय मेंअंतर्राष्ट्रीय अंतरात्मा दिवसका महत्व केवल एक औपचारिक आयोजन नहीं, बल्कि मानवता के अस्तित्व के लिए अनिवार्य हो गया है।भारतीय परंपरा में अंतरात्माकेवल एक दार्शनिक विचार नहीं, बल्कि वह परम तत्व है जो मनुष्य के अस्तित्व का केंद्र है। वेदों और उपनिषदों में इसे द्रष्टा अर्थात देखने वाला, साक्षीऔर अन्तर्यामी अर्थात भीतर से संचालित करने वाला कहा गया है।कठोपनिषद में अंतरात्मा को रथ के स्वामी अर्थात रथी के रूप में समझाया गया है–

आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव तु।

–कठोपनिषद 1/3/3

अर्थात– आत्मा को रथ का स्वामी जानो और शरीर को केवल एक रथ। जैसे रथ बिना सारथी और स्वामी के जड़ है, वैसे ही शरीर बिना अंतरात्मा के चेतनाशून्य है।

श्वेताश्वतर उपनिषद के अनुसार वह परमात्मा अर्थात ब्रह्म ही जीवात्मा के रूप में हृदय में स्थित है–

अणोरणीयान्महतो महीयानात्मास्य जन्तोर्निहितो गुहायाम्।

–श्वेताश्वतर उपनिषद 3–20

अर्थात –यह तत्व अणु से भी सूक्ष्म और महान से भी महान है, जो प्राणी की हृदयरूपी गुफा में छिपा है। जब हम बाहरी शोर को शांत कर अंतर्मुखी होते हैं, तभी इसकी अनुभूति होती है।

ऋग्वेद में अंतरात्मा और परमात्मा के संबंध को एक सुंदर रूपक से समझाया गया है–

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते।

–ऋग्वेद 1/164/20

अर्थात– दो सुंदर पंखों वाले पक्षी (जीवात्मा और परमात्मा) एक ही वृक्ष (शरीर) पर बैठे हैं। एक पक्षी (अंतरात्मा) फल चखता है (कर्मों का भोग करता है), जबकि दूसरा केवल देखता रहता है (साक्षी भाव)। यही अंतरात्मा की वास्तविक स्थिति है–संसार में रहते हुए भी उससे निर्लिप्त रहना। वैदिक परंपरा में अंतरात्मा को ऋतअर्थात ब्रह्मांडीय सत्य का प्रतिनिधि माना गया है। जब मनुष्य कोई अनुचित कार्य करता है, तो जो संकोचया भयपैदा होता है, वह अंतरात्मा की ही पुकार है। शतपथ ब्राह्मण के अनुसारआत्मा ही सत्य है, इसलिए जो अपनी अंतरात्मा के विरुद्ध जाता है, वह प्रकृति के नियम ऋत के विरुद्ध जाता है।यजुर्वेद का उद्घोष है–

तद् देवा ज्योतिषां ज्योतिरायुर्होपासतेऽमृतम्।

अर्थात– वह अंतरात्मा ज्योतियों की भी ज्योति है।

वैदिक साधना का अंतिम लक्ष्य अहं ब्रह्मास्मि अर्थात–मैं ही वह ब्रह्म हूं, का अनुभव करना है। यह तब संभव है, जब व्यक्ति अपनी बुद्धि और अहंकार की परतों को हटाकर शुद्ध अंतरात्मा से साक्षात्कार करे।वैदिक दृष्टिकोण से अंतरात्मा वह अविनाशी ऊर्जा है जो जन्म–मरण के चक्र से परे है। यह हमारे भीतर बैठा वह शिक्षकहै, जो निरंतर हमें धर्म और नीति की ओर प्रेरित करता है। आधुनिक संदर्भ में इसे अंतरात्मा की आवाजकहा जाता है, लेकिन वैदिक अर्थ में यह उससे कहीं अधिक व्यापकस्वयं ईश्वर का अंश है।

वैदिक और उपनिषदिक परंपरा में अंतरात्मा को जाग्रत करना स्वसे परमकी यात्रा है। इसे जाग्रत करने, अंतरात्मा को सक्रिय और प्रखर बनानेके लिए वैदिक ग्रंथों में साधना की विधियां भी बताई गई हैं।कठोपनिषद 2/1/1 में प्रत्याहार के बारे में कहा गया है कि विधाता ने हमारी इन्द्रियों को बाहर की ओर खुलने वाला बनाया है, इसलिए हम बाहर देखते हैं, भीतर नहीं।इसके लिए प्रतिदिन कुछ समय एकांत में बैठकर बाहरी दृश्यों और ध्वनियों से कटकर अपनी सांसों और हृदय की धड़कन पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। जब इन्द्रियां बाहर से हटती हैं, तब अंतरात्मा की आवाज सुनाई देने लगती है।वैदिक मार्ग में स्वाध्यायका अर्थ केवल पुस्तकें पढ़ना नहीं, बल्कि स्वका अध्ययन है।रात्रि में सोने से पहले पूरे दिन के कर्मों का विश्लेषण करना उत्तम माना गया है। ऋग्वेद के मनससूक्तों के अनुसारमन को शुभ संकल्पों से भरना –तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु। जब आप अपने विचारों को तटस्थ होकर देखते हैं, तो आप कर्तासे साक्षीबनने लगते हैं। यही अंतरात्मा की पहली जागृति है।माण्डूक्य उपनिषद के अनुसारॐ (ओम)आत्मा का ही शब्द–स्वरूप है। ॐ का उच्चारण करते समय उसके कंपन को हृदय प्रदेश अर्थात अनाहत चक्र में महसूस करना, प्रणव ध्यान है। यह ध्वनि मन के अहंकार, क्रोध, मोह अदि कचरे को साफ करती है और आत्मा के शुद्ध स्वरूप को प्रकट करती है।अंतरात्मा ऋतका अंश है। झूठ बोलने या अनैतिक कार्य करने से अंतरात्मा की शक्ति क्षीण हो जाती है।जब व्यक्ति मन, वचन और कर्म में एकरूपता लाता है, तो उसकी अंतरात्मा तेजस्वीहो जाती है। तैत्तिरीय उपनिषद की शिक्षा है– सत्यं वद, धर्मं चर अर्थात सत्य बोलो, धर्म पर चलो। यह आचरण अंतरात्मा के ऊपर जमी धूल को हटा देता है।महर्षि पतंजलि के अनुसारजब चित्त की वृत्तियांअर्थात लहरें शांत हो जाती हैं, तब द्रष्टा अर्थात आत्माअपने वास्तविक स्वरूप में स्थित होता है।प्राणायाम अर्थात प्राणों का नियमन करने से बुद्धि सूक्ष्म होती है। सूक्ष्म बुद्धि ही अंतरात्मा के सूक्ष्म संकेतों को पकड़ पाती है।अंतरात्मा को जाग्रत करना कोई नई वस्तु प्राप्त करना नहीं है, बल्कि उस आंतरिक प्रकाशको पहचानना है जो पहले से मौजूद है, पर सांसारिक शोर में दबा हुआ है। आज जब दुनिया युद्धों और वैचारिक ध्रुवीकरण से जूझ रही है, तब ऋग्वेद की उक्ति एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति अर्थात सत्य एक है, विद्वान उसे अलग–अलग नामों से पुकारते हैं, अत्यंत प्रासंगिक है।अंतर्राष्ट्रीय अंतरात्मा दिवस का मूल उद्देश्य शांति की संस्कृतिको बढ़ावा देना है। यदि राष्ट्र और व्यक्ति इस वैदिक सत्य को स्वीकार कर लें कि सबकी अंतरात्मा का स्रोत एक ही है, तो घृणा और कट्टरवाद स्वतः समाप्त हो जाएंगे।वर्तमान में भ्रष्टाचार और पर्यावरणीय विनाश का मुख्य कारण नैतिक संकटहै। वैदिक दर्शन में ऋतकी अवधारणा है।अंतरात्मा दिवस हमें आत्म–चिन्तन की प्रेरणा देता है। यजुर्वेद का प्रार्थना मन्त्र कहता है– तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु अर्थात मेरा मन कल्याणकारी संकल्पों वाला हो, आज के कॉर्पोरेट और राजनीतिक नेतृत्व के लिए एक गाइडकी तरह है, ताकि वे केवल लाभ के लिए नहीं, बल्कि सामूहिक कल्याण के लिए निर्णय लें।आधुनिक युग में तनाव और अवसाद महामारी की तरह हैं। उपनिषदों का महावाक्य प्रज्ञानम् ब्रह्म अर्थात शुद्ध चेतना ही ब्रह्म है, व्यक्ति को बाहरी उपलब्धियों के बजाय आंतरिक शांति की ओर मोड़ता है।अंतरात्मा दिवस का संदेश है– भीतर की आवाज सुनो। वैदिक ध्यान और साक्षी भावकी तकनीकें व्यक्ति को मानसिक रूप से सुदृढ़ बनाती हैं, जिससे वह बाहरी दबावों के बावजूद अपनी अंतरात्मा के साथ सामंजस्य बिठा सके।अथर्ववेद की प्रसिद्ध "उक्ति श्माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः"अर्थात भूमि मेरी माता है और मैं पृथ्वी का पुत्र हूं,आज के जलवायु संकट के समय में अंतरात्मा को झकझोरने वाली है।जब हमारी अंतरात्मा जाग्रत होती है, तो हम प्रकृति का शोषण नहीं, पोषण करते हैं। अंतर्राष्ट्रीय अंतरात्मा दिवस पर यह वैदिक विचार हमें उपभोक्तावादसे हटाकर सतत जीवनकी ओर ले जाता है।श्रीमद्भगवद्गीता और उपनिषदों का सार है– सर्वभूतहिते रताः अर्थात सबके कल्याण में ही अपना कल्याण देखना।आज के डिजिटल युग में जहां फेक न्यूजऔर घृणाफैलाना आसान है, वहां सत्यमेव जयते अर्थात सत्य की ही जीत होती है, की उक्ति व्यक्ति को उसकी अंतरात्मा के प्रति जवाबदेह बनाती है। यह दिवस हमें याद दिलाता है कि तकनीक कितनी भी उन्नत हो जाए, अंततः मानवीय मूल्य ही समाज को बचाएंगे।अंतर्राष्ट्रीय अंतरात्मा दिवस का लक्ष्य और वैदिक ग्रंथों का आत्मबोधका संदेश एक ही विन्दु पर मिलते हैं– अप्पो दीपो भव अर्थात अपना प्रकाश स्वयं बनो। जब दुनिया बाहरी अंधकार अर्थात हिंसा और स्वार्थ से घिरी हो, तब वैदिक उक्तियां हमारी अंतरात्मा के भीतर वह मशाल जलाती हैं, जो सही और गलत के बीच भेद कर सके।आज की सबसे बड़ी वैश्विक चुनौतियों–जलवायु परिवर्तन और युद्धके समाधान में वैदिक उक्तियां केवल विचार नहीं, बल्कि एक एक्शन प्लानकी तरह हैं।जब हम अंतर्राष्ट्रीय अंतरात्मा दिवसमनाते हैं, तो इन संकटों पर वैदिक दृष्टिकोण की प्रासंगिकता और बढ़ जाती है।वर्तमान पर्यावरण संकट हमारी अंधाधुंध उपभोगकी प्रवृत्ति का परिणाम है। ईशोपनिषद कहता है– ईशावास्यमिदं सर्वं अर्थात इस ब्रह्मांड में जो कुछ भी है, वह ईश्वर का वास है। इसलिए, त्यागपूर्वक भोग करो, किसी दूसरे के धन का लालच मत करो।यह सतत उपभोगका मूल मंत्र है। यदि हमारी अंतरात्मा यह स्वीकार कर ले कि संसाधन सबके लिए हैं, तो लालचका स्थान जरूरतले लेगी। अथर्ववेद के मंत्र– पुत्रोऽहं पृथिव्याः के अनुसार भूमि को माता मानने की भांति जब हम प्रकृति को वस्तुके बजाय मातामानते हैं, तो शोषण की भावना समाप्त हो जाती है।

Printed, Published,Edited, & Owned by Prakash Kumar Dhal, Printed at Promodini Publication, Main road , Chhend colony , Rourkela-15 & Published at ECR-73, Chhend Colony, Rourkela-15, Editor : Prakash kumar Dhal, Email:kalingasamachar@gmail.com , Mob: 9439951525, Ph. 0661-2646999

ओडिशा समाचार

कलिंग समाचार | राउरकेला, शुक्रवार 20 नवम्बर 2026 | पृष्ठ-6

चक्रवात अकवन से निपटने के लिए ओडिशा में ७९०० आश्रय स्थल चिन्हित, एनडीआरएफ और ओडीआरएफ तैनात



भुवनेश्वर १९/११ (संवाददाता): ओडिशा और आंध्र प्रदेश ने चक्रवाती तूफान %अकवान% के पूर्वी तट की ओर बढ़ने के मद्देनजर आपातकालीन तैयारियां तेज कर दी हैं। प्रशासन लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाने, राहत शिविरों को सक्रिय करने और आपदा प्रतिक्रिया टीमों को तैनात करने का काम कर रहा है। राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया बल (NDRF) ने पांच राज्यों और एक केंद्र शासित प्रदेश में 31 टीमें तैनात की हैं, जबकि बचाव और राहत कार्यों में मदद के लिए 18 अतिरिक्त टीमों को रिजर्व में रखा गया है। NDRF के अनुसार, चक्रवात के तट से टकराने की संभावना को देखते हुए टीमों को रणनीतिक स्थानों पर तैनात किया गया है। भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (IMD) ने अनुमान लगाया है कि यह तूफान गुरुवार दोपहर तक उज़री आंध्र प्रदेश-यानम और दक्षिणी ओडिशा के तटों (नरसापुर और पुरी के बीच) से होकर गुजरेगा। इस दौरान हवा की गति 90-100 किमी प्रति घंटा रहने और झोंकों के साथ 110 किमी प्रति घंटा तक पहुंचने की संभावना है।

ओडिशा ने लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया, लगभग 7,900 आश्रय स्थल चिह्नित किए . मुज़्य सचिव अनु गर्ग के अनुसार, ओडिशा ने अपनी तैयारियों को तेज कर दिया है और संवेदनशील इलाकों से लगभग 72,000 लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया गया है। राज्य ने लगभग 7,900 आश्रय स्थल चिह्नित किए हैं, जहां उन लोगों को रखा जा सकता है जिन्हें सुरक्षित स्थानों पर ले जाने की आवश्यकता पड़ सकती है। राज्य ने आपातकालीन कार्यों के लिए ओडिशा डिजास्टर रैपिड एज़्शन फोर्स की 60 टीमें, NDRF की 14 टीमें और फायर सर्विस की 131 टीमें तैनात की हैं। अधिकारियों ने गर्भवती महिलाओं और अन्य संवेदनशील लोगों के लिए भी विशेष इंतजाम किए हैं। राज्य में चिह्नित की गई 9,100 गर्भवती महिलाओं में से अधिकांश को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचा दिया गया है। जिला प्रशासन को संवेदनशील इलाकों में लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाने और राहत कार्यों के लिए समन्वय करने का निर्देश दिया गया है। इससे पहले, 17 नवंबर की एक ड्डहस्र रिपोर्ट में बताया गया था कि अधिकारियों ने आठ जिलों में लगभग 2.04 लाख लोगों की पहचान की है, जिन्हें मौसम की स्थिति और स्थानीय जोखिम के आकलन के आधार पर सुरक्षित स्थानों पर ले जाने की आवश्यकता हो सकती है। राज्य ने 87 संवेदनशील ज़्लॉक और 1,902 संवेदनशील स्थानों की पहचान की थी।

आंध्र प्रदेश ने अपने प्रशासन को भी हाई अलर्ट पर रखा है। राज्य सरकार ने आपातकालीन स्थितियों से निपटने के लिए ह्यष्ठक्रस्र की 13 टीमों और स्टेट डिजास्टर रिस्पॉन्स फोर्स (स्ष्ठक्रस्र) की 11 टीमों को तैयार रखा है। ज़िला और मंडल स्तर के कंट्रोल रूम चौबीसों घंटे काम कर रहे हैं, और असुरक्षित जगहों पर रहने वाले लोगों को राहत केंद्रों तक पहुँचाने के इंतज़ाम किए गए हैं। बचाव कार्यों के लिए फायर सर्विस के कर्मचारियों को भी तैयार रखा गया है। बिजली वितरण कंपनियों ने ज़रूरी सामान का स्टॉक कर लिया है और बिजली के बुनियादी ढांचे को संभावित नुकसान से निपटने के लिए आपातकालीन टीमों को तैनात किया है। तटीय इलाकों में रहने वाले लोगों को घरों के अंदर रहने और बिना ज़रूरत बाहर न निकलने की सलाह दी गई है।

ओडिशा विधानसभा में बाढ़ और सीमा विवाद पर हंगामा, केवल १४ मिनट चली कार्यवाही



भुवनेश्वर १९/११ (संवाददाता): ओडिशा विधानसभा के शीतकालीन सत्र के दूसरे दिन बृहस्पतिवार को सदन की कार्यवाही केवल 14 मिनट तक ही चल सकी, ज़्योंकि विपक्षी बीजू जनता दल और कांग्रेस के सदस्यों ने विरोध प्रदर्शन किया। विपक्षी दल गंजाम में आई बाढ़ और पड़ोसी राज्य आंध्र प्रदेश के साथ कोटिया सीमा विवाद पर चर्चा की मांग कर रहे थे। पूर्वाह्न 10ः30 बजे प्रश्नकाल के लिए सदन की कार्यवाही शुरू होते ही हंगामा मच गया; अध्यक्ष सुरामा पाढ़ी के अपनी सीट पर बैठने से पहले ही विपक्षी विधायक सदन के बीचों-बीच आ गए।

पाढ़ी ने जब संसदीय कार्य मंत्री मुकेश महालिंग को एक सवाल का जवाब देने की अनुमति दी, तो विपक्ष के सदस्यों ने नारे लगाए, जिससे कार्यवाही में बाधा उत्पन्न हुई। कुछ विधायक अधिकारियों की मेजों पर खड़े हो गए, जबकि अन्य ने अध्यक्ष के आसन के पास नारे लगाए। कांग्रेस विधायक ताराप्रसाद बाहिनीपति को भाजपा सरकार के खिलाफ नारे लगाते हुए अध्यक्ष के आसन पर हाथ मारते देखा गया।

दोनों विपक्षी दलों के सदस्यों ने तज़्तियां दिखाईं और अपने-अपने मुद्दों पर चर्चा की मांग की। बीजद ने जहां गंजाम में आई बाढ़ पर बहस की मांग की, वहीं कांग्रेस सदस्यों ने कोटिया सीमा विवाद का मुद्दा उठाया। विधानसभा अध्यक्ष ने कार्यवाही को पहले शाम चार बजे तक के लिए स्थगित कर दिया।जब सदन की कार्यवाही फिर शुरू हुई, तो वैसी ही स्थिति देखने को मिली; विपक्ष के सदस्यों ने एक बार फिर सदन के बीचों-बीच आकर नारे लगाए। बार-बार कार्यवाही स्थगित होने के कारण प्रश्नकाल, शून्यकाल और महत्वपूर्ण विधायी कामकाज नहीं हो पाए। बीजद विधायक सारदा प्रसन्न जेना ने बताया कि उनकी पार्टी ने सत्र शुरू होने से एक दिन पहले ही विधानसभा अध्यक्ष को एक नोटिस दिया था, जिसमें अन्य सभी कामकाज रोककर बाढ़ पर चर्चा कराने की मांग की गई थी। उन्होंने कहा, हालांकि, अध्यक्ष ने हमारे नोटिस पर ध्यान नहीं दिया। इसलिए, चर्चा की मांग करने के अलावा कोई और विकल्प नहीं है। भाजपा विधायक इरासीश आचार्य ने कार्यवाही में बाधा डालने के लिए विपक्ष की आलोचना की और कहा कि विधानसभा करदाताओं के पैसे से चलाई जा रही है। उन्होंने कहा, हम चर्चा करने के लिए तैयार हैं, लेकिन उन्हें बैठकर बहस करने दें।

100 किमी/घंटा की रफ्तार से चलेंगी हवाएं, सीएम मोहन चरण माझी ने की तैयारियों की समीक्षा, रेलवे ने सक्रिय किए वॉर रूम



भुवनेश्वर १९/११ (संवाददाता): बंगाल की खाड़ी में बना भीषण चक्रवाती तूफान अकवान तेजी से भारतीय तटों की ओर बढ़ रहा है। भारतीय मौसम विज्ञान विभाग के ताजा पूर्वानुमान के अनुसार, यह चक्रवाती तूफान 20 नवंबर की दोपहर तक उज़री आंध्र प्रदेश, यनम और दक्षिणी ओडिशा के तटीय इलाकों को पार कर सकता है। संभावित खतरे और जान-माल के नुकसान को रोकने के लिए ओडिशा सरकार ने युद्धस्तर पर राहत और बचाव अभियान शुरू कर दिया है। मुज़्यमंत्री मोहन चरण माझी ने बुधवार को बताया कि अब तक लगभग 50,000 लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया जा चुका है। राज्य सरकार की तैयारियों को लेकर बुलाई गई एक उच्च-स्तरीय समीक्षा बैठक की अध्यक्षता करते हुए मुज़्यमंत्री माझी ने कहा कि सरकार का लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि तूफान के दौरान किसी की जान न जाए। इसके लिए मैदानी और पहाड़ी, दोनों इलाकों से लोगों को बड़े पैमाने पर सुरक्षित स्थानों पर ले जाया जा रहा है।

उन्होंने बताया कि सबसे अधिक लोगों को गंजाम जिले से निकाला जाएगा और यह प्रक्रिया अभी जारी है। इसके अलावा, गजपति, कंधमाल, रायगडा, कोरापुट और मलकानगिरी जिलों के कई गांवों से भी लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया जा रहा है।

मुज़्यमंत्री के अनुसार, चक्रवात से प्रभावित होने वाले लोगों की सुरक्षा के लिए राज्य में लगभग 3,000 आश्रय स्थल (शेल्टर) तैयार किए गए हैं, जिनमें से 448 पहले ही काम करना शुरू कर चुके हैं। राज्य सरकार ने राहत और बचाव कार्यों के लिए 15 जिलों को 20 करोड़ रुपये आवंटित किए हैं। भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (ड्डस्रह्व) ने गुरुवार और शुक्रवार को ओडिशा के 11 जिलों में बहुत भारी से अत्यधिक भारी बारिश की चेतावनी जारी की है। इन जिलों में मलकानगिरी, कोरापुट, रायगडा, कालाहांडी, गजपति, गंजाम, कंधमाल, बौध, पुरी, नयागढ़ और खुर्दा शामिल हैं। मुज़्यमंत्री के मुताबिक, ओडिशा के तटीय इलाकों में हवा की औसत गति 100 किलोमीटर प्रति घंटा तक रहने की संभावना है। इसलिए, प्रशासन को विशेष सतर्कता बरतने के निर्देश दिए गए हैं। ओडिशा सरकार ने छह जिलों में स्कूलों को बंद रखने की भी घोषणा की है। गुरुवार से गंजाम, गजपति, पुरी, जगतसिंहपुर, केंद्रपाड़ा और कंधमाल जिलों में स्कूल बंद रहेंगे।इस बीच, रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने दक्षिण तटीय रेलवे के महाप्रबंधक और अन्य वरिष्ठ रेलवे अधिकारियों के साथ मिलकर, आने वाले चक्रवात अकवान से निपटने की तैयारियों की समीक्षा की। मंत्रालय के एक प्रेस नोट में कहा गया है, मंत्री ने रेलवे अधिकारियों को सभी जरूरी एहतियाती कदम उठाने का निर्देश दिया है। इसमें यात्रियों की सुरक्षा, रेलवे के बुनियादी ढांचे की हिफाजत, ट्रेनों के संचालन को व्यवस्थित करने और बहाली (रेस्टोरेशन) की पहले से योजना बनाने पर विशेष जोर दिया गया है। इसमें आगे कहा गया है, किसी भी स्थिति पर रियल-टाइम नजर रखने, बेहतर तालमेल बिठाने और तुरंत कार्रवाई करने के लिए डिवीजन, जोन और रेलवे बोर्ड के स्तर पर डेडिकेटेड वॉर रूम सक्रिय कर दिए गए हैं।

ओडिशा विधानसभा में सीएम मोहन चरण माझी ने 24,150 करोड़ का अनुपूरक बजट रखा

भुवनेश्वर १९/११ (संवाददाता): ओडिशा के मुज़्यमंत्री मोहन चरण माझी ने बुधवार को विधानसभा में विज़ वर्ष 2026-27 के लिए 24,150 करोड़ रुपये का अनुपूरक बजट पेश किया। अधिकारियों ने बताया कि अनुपूरक बजट में कार्यक्रम व्यय के लिए 17,990 करोड़ रुपये, आपदा प्रबंधन के लिए 5,100 करोड़ रुपये और प्रशासनिक व्यय के लिए 1,060 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है। विज़ विभाग का भी प्रभार संभाल रहे माझी ने इससे पहले विज़ वर्ष 2026-27 के लिए 3.10 लाख करोड़ रुपये का वार्षिक बजट पेश किया था।

अधिकारियों के अनुसार, कार्यक्रम व्यय के लिए आवंटित 17,990 करोड़ रुपये में से 14,228 करोड़ रुपये राज्य सरकार की योजनाओं के क्रियान्वयन, 3,442 करोड़ रुपये केंद्र प्रायोजित योजनाओं और 320 करोड़ रुपये केंद्रीय क्षेत्र की योजनाओं के लिए रखे गए हैं। इससे पहले, विधानसभा के शीतकालीन सत्र के पहले दिन को सदन में हंगामे के बाद शाम चार बजे तक के लिए स्थगित कर दिया गया। सदन में दो पूर्व सदस्यों, दो पुलिसकर्मियों और चक्रवात अर्नब के 10 पीड़ितों को श्रद्धांजलि अर्पित की गई थी। अध्यक्ष द्वारा प्रश्नकाल शुरू होने की घोषणा के तुरंत बाद हंगामा शुरू हो गया। बीजद और कांग्रेस के सदस्य अध्यक्ष के आसन के सामने आ गए और गंजाम जिले में कथित तौर पर मानव निर्मित बाढ़ तथा पड़ोसी आंध्र प्रदेश के साथ कोटिया विवाद को लेकर भाजपा सरकार के खिलाफ नारेबाजी की। शाम चार बजे सदन की कार्यवाही दोबारा शुरू होने पर विपक्षी विधायकों का विरोध जारी रहा। हंगामे के बीच विधानसभा अध्यक्ष ने माझी को विज़ वर्ष 2026-27 का पहला अनुपूरक बजट पेश करने की अनुमति दी। इसके बाद सदन की कार्यवाही दिनभर के लिए स्थगित कर दी गई।

सांसद आदर्श ग्राम पंचायत में दिशाहीन हुई योजनाएं

राउरकेला १९/११ (संवाददाता):गुरुंडिया ज़्लाक के गुरुंडिया पंचायत को सांसद आदर्श ग्राम के रूप में घोषित करने के बाद यहां विकास कार्य शुरू किए गए हैं जिसमें से अधिकतर अधूरे हैं। शिशु उद्यानए स्ट्रीट लाइटए कल्याण मंडप के लिए जगह की पहचान की गई पर काम शुरू नहीं हुआ। इसमें सांसद जुएल ओराम भी सक्रियता नहीं दिखा रहे हैं। 12 लाख की लागत से निर्मित शिशु उद्यान व हनुमान प्रतिमा जर्जर हो गई है। इसमें ताला लगा है एवं बच्चों के लिए लगे मनोरंजन के उपकरण बर्बाद हो रहे हैं। सफाई नहीं होने से पार्क घासफूस से भर गया है।तहसील कार्यालय व आसपास में छह लाख रुपये की लागत पर स्ट्रीट लाइट लगने के छह महीने बाद ही अधिकतर खंभे टूट गए एवं लाइट नहीं जल रही है। इसकी मरज़्मत के प्रति किसी का ध्यान नहीं है। बस स्टैंड में 65.67 लाख की लागत पर बना प्रतीक्षालय भी बेकार पड़ा है। सांसद आदर्श पंचायत में 79 परियोजनाओं पर काम करने का निर्णय लिया गया था। इसमें से 54 का काम पूरा दिखाया जा रहा है जबकि 17 का काम चल रहा है। इसमें बस स्टैंड गार्डवाल एवं चहारदीवारी निर्माण पर 30 लाखए बड़गांव सीताराम हाईस्कूल के पास चार लाख की लागत पर सौर ऊर्जा संचालित पाइप से जलापूर्ति परियोजनाए बस स्टैंड में नौ लाख की लागत पर 13 मार्केट शेड का निर्माण एवं अन्य स्रोत से 60 लाख रुपये से अधिक खर्च किए गए हैं।

एसएमएस-1 में विभागीय स्तर पर ठेका श्रमिकों के साथ सुरक्षा विचार-विमर्श कार्यक्रम आयोजित



राउरकेला १९/११ (संवाददाता): स्टील मेल्टिंग शॉप-1 (एस.एम.एस.-1) में पहली बार विभागीय स्तर पर ठेका श्रमिकों के लिए सुरक्षा विचार-विमर्श कार्यक्रम 'सुरक्षा चर्चा' का आयोजन 18 नवंबर, 2026 को किया गया। इस पहल का उद्देश्य सुरक्षा के प्रति जागरूकता को मजबूत करना, खुलकर चर्चा को प्रोत्साहित करना तथा ठेका श्रमिकों के बीच सक्रिय सुरक्षा संस्कृति को विकसित करना था।कार्यक्रम में कार्यपालक निदेशक (वर्क्स), श्री बी.आर.पलाई उपस्थित थे। उन्होंने विभाग में सुरक्षा से जुड़े विभिन्न विषयों पर ठेका कर्मचारियों के साथ चर्चा किया। इस अवसर पर मुज़्य महा प्रबंधक एवं विभागाध्यक्ष (एस.एम.एस.-1), श्री प्रसेनजीत दास, मुज़्य महा प्रबंधक (सुरक्षा एवं अग्निशमन सेवाएं), श्री हीरालाल महापात्र, महाप्रबंधक एवं विभागाध्यक्ष (सुरक्षा अभियांत्रिकी विभाग), श्री अबकास बेहेरा के साथ कई वरिष्ठ अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे। कार्यक्रम में विभागीय सुरक्षा अधिकारियों (डी.एस.ओ.), क्षेत्रीय सुरक्षा अधिकारियों (ए.एस.ओ.) तथा एस.एम.एस.-1 के अंतर्गत कार्यरत विभिन्न एजेंसियों के ठेका श्रमिकों ने भाग लिया। अपने संबोधन में श्री पलाई ने संगठन के 'जीरो हार्म' (शून्य क्षति) मिशन को हासिल करने में सुरक्षा के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने ठेका श्रमिकों से सतर्क रहने, सुरक्षित कार्य पद्धतियों का पालन करने तथा असुरक्षित परिस्थितियों एवं असुरक्षित कार्यों की तत्काल सूचना देने का आग्रह किया। उन्होंने इस बात पर विशेष बल दिया कि सुरक्षा एक सामूहिक जिज़्मेदारी है और प्रत्येक कर्मचारी को न केवल अपनी, बल्कि अपने सहकर्मियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने की जिज़्मेदारी भी स्वयं लेनी चाहिए। इससे पहले, श्री दास ने उपस्थितजनों का स्वागत किया तथा कार्यस्थल पर सुरक्षा मानकों में सुधार लाने के लिए नियमित सुरक्षा चर्चा के महत्व पर प्रकाश डाला। श्री बेहेरा ने कार्यस्थल पर सुरक्षा, सामान्य खतरों तथा किसी भी कार्य को शुरू करने से पहले जोखिमों की पहचान एवं उनके नियंत्रण के महत्व के बारे में जानकारी दी। श्री महापात्र ने सेल एवं आर.एस.पी. के सुरक्षा संबंधी आंकड़ों पर विस्तार से चर्चा की तथा प्रतिभागियों को सुरक्षा प्रक्रियाओं का कड़ाई से पालन करने, उपयुक्त व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरणों (पी.पी.ई.) का उपयोग करने और अपने कार्यों के दौरान सतर्क रहने की सलाह दी। इसके बाद, सहायक महा प्रबंधक (एस.एम.एस.-1), श्री एस.श्रीनाथ ने एस.एम.एस.-1 में सुरक्षा विषय पर एक प्रस्तुतिकरण दी। चर्चा के दौरान घटनाओं से प्राप्त सीख साझा करने, सुरक्षित कार्य पद्धतियों तथा पिघली हुई धातु के संचालन वाले क्षेत्रों में कार्य करते समय बरती जाने वाली सावधानियों जैसे महत्वपूर्ण विषयों को शामिल किया गया।

विचार-विमर्श सत्र के दौरान कार्यक्रम में आयोजित ओपन हाउस सत्र में श्रमिकों को अपनी सुरक्षा संबंधी चिंताओं को सामने रखने तथा सुझाव देने का अवसर मिला। इससे सुरक्षित कार्यस्थल के निर्माण में दोतरफा चर्चा के महत्व को और बल मिला। कार्यक्रम का एक प्रमुख आकर्षण यह रहा कि सुरक्षा के क्षेत्र में मूल्यवान सुझाव देने के लिए चार ठेका कर्मचारियों को कार्यपालक निदेशक (वर्क्स) द्वारा मौके पर ही पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम का समापन प्रतिभागियों द्वारा सुरक्षित कार्य पद्धतियों का पालन करने तथा खतरों की पहचान एवं उनकी रोकथाम की जिज़्मेदारी उठाने के सामूहिक संकल्प के साथ हुआ।